श्री रत्नप्रभाकरज्ञानपुष्पमाला. पुष्प नं. ८१

अथश्री

जैन जाति निर्णय प्रथमाङ्क

अथवा

महाजनवंस मुक्तावलीकी समालोचना।

लेखक,

श्रीमदुपकेशगच्छीय—

मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज.

द्रव्य सहायक,

पँवारवंशीय श्रेष्टिगौत्रीवेदमुत्ताशाखायां श्रेष्टिवर्य्य—

ताराचंदजी खीवराजजी. मु० बीलाडा (मद्रास)

प्रकाशक,

श्रीरत्नप्रभाकरज्ञानपुष्पमाला. फलोदी—(मारवाड)

प्रथमावृत्ति १००० वीर सं० २४५२ विक्रम सं० १९८३

कि० चार आना.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भूलों का सुधारा.

पृष्ट १४ लींटी ९ में–पं. साधुरत्न लिखा है वह " खरतराचार्य जिनपतिसूरि का शिष्य सुमतिगणी चाहिये—

पृष्ट १८ लीटी १४ में–९९४३ के बदले ११४३ पढो।

भावनगर—धी आनंद प्रीन्टींग प्रेसमें शा. गुलाबचंद लल्लुभाइने छापी.

पुस्तकों कि आशातना व अनादर न हों इस हेतु से इस किताब की नाममात्र किंमत चार आना रखी है जो रकम निच्छरावल कि आवेगी वह पुनः पुस्तकोंकी छपाइ में लगाई जावेगी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीमदुपकेशगच्छीय.

मुनिराजश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज ।

जैन दीक्षा १९७२

स्थान० दीक्षा १९६३

जन्म सं. १९३७ विजयादशमो.

आनंद प्रेस-भावनगर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धन्यवाद के साथ स्वीकार.

पँवार वंश मुगुटमणि महाराजाधिराज उत्पलदेवका वंश परम्पर में श्रेष्टिगौत्र वैद्यमुत्ता शाखायां श्रेष्टिवर्य्य श्रीमान् ताराचंदजी खीवराजजी बीलाडा (मद्रास) वालोंने अपनी सुपुत्रि रत्नकुँवरी के लग्न की खुशालीमें मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज का सदुपदेश से आपने बीलाडा का बडामन्दिरमें अठाई महोत्सव आठ दिन बडे धामधूमसे संगीतके साथ चोसठ प्रकार की पूजा पढाई मयबेंडवाजोंके प्रभु सवारी चढाई गई तथा रु. २५) श्री ज्ञानप्रकाश मित्रमण्डलमें भेट कीया श्री जैन पाठशालामें मावारी दो रूपैया देने का बचन दीया और रू. २५१) ज्ञानवृद्धि के लिये श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला मु: फलोदी को अर्पण कर मंगल मनाया उसे हम सहर्ष उपकार के साथ स्वीकार कर आप श्रीमान को धन्यबाद देते है और अन्य दानवीर धनाढ्योंसे निवेदन करते है कि एसे मंगलिक कार्योंमें जहां हजारो रूपैये खरच किये जाते हैं वहां थोडा बहुत रूपैये एसे पवित्र कार्यों के लिये निकाल अपनी चल लक्ष्मीको अचल अवश्य बनावे किमधिकम्।

आपका

जोरावरमल वैद

मेनेजर

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला (फलोदी)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीमान्मान्यवर—यादव (भाटी) वंशी

मुत्ताजी हरषराजजी साहब-बीलाडा.

आप श्रीमान्, आपके घरका जरूरी कार्य व वकालतके कार्यों.....इतनी मुदतके लिये बंध रख मेरी बाई (पुत्रि) रत्नकुँवरीकी सादिमें आपने हरेक कार्योंमें तनतोड मदद करी है इतना ही नहीं बल्के मुझे जो प्रारंभसे अन्त तकके कार्योंमें जो सफलता मीली वह सब आप ही की सहायताका फल है आपका इस महान् उपकारको में किस शब्दोंमें लिखुं! कारण एसा कोई शब्द ही मेरे पास नहीं है कि जिससे में आपकी तारीफ लिख सकुं

आपसे यह याचना है कि महेरबानी कर मुझे कृतार्थ बननेका समय शीघ्र बक्सीस करावे।

आपका कृपापात्र,

खीवराज मुत्ता.

बीलाडा—(मद्रास)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषयानुक्रमणिका.

विषय	पृष्ठ		
मुक्तावलि: का परिचय	१	बोत्थरागोत्र ,,	४६
प्रस्तावना	६	गेहलडा ,,	५७
महाजन वंस १८ गौत्र	११	लोढा बुरड नाहार ,,	५८
संचेति गोत्र और समालोचना	१५	छाजेडगोत्र ,,	५६
वरडिया ,, ,,	१७	संघि भंडारी डागा ,,	६०
चोपडा ,, ,,	१९	ढड्ढागोत्र	६२
धाडिवाल ,, ,,	२१	पीपाडा	६३
झामड–झाबक ,,	२२	छलाणिगोडावत	६४
बांठिया गोत्र ,,	२३	कटोतीया भुतेडिया	६४
चोरडिया ,,	२५	जडिया कांकरीया	६४
भन्साली ,,	३२	श्रीश्रीमाल	६४
लुकड गोत्र ,,	३३	पोकरणा	६४
आर्य–लुणावत ,,	३४	कोचर और मुनोत	६५
बाफणा ,,	३६	श्रीमाल पोरवाड	६६
कटारिया ,,	४०	वैदमुत्ता	६६
डागामालु ,,	४२	**द्वितीयांक.**	
रांकावांका ,,	४२	पार्श्व परम्परा	६९
राखेचा ,,	४५	सातगच्छोंके नाम	७०
लुणिया ,,	४६	तातेडादि २२ जातियों	७१
डोसीगोत्र ,,	४७	बाफणादि ५२ ,,	७१
सुरांणागोत्र ,,	४७	करणांवटादि १४ ,,	७२
आगेरिया ,,	४८	बलाहा रांकादि २६ ,,	७२
सुघड दुगड ,,	४९	मोरख पोकरणादि १७ ,,	७२
गंगदुधेरिया ,,	४६	कुलहट सुरवादि १८ ,,	७३
		विरहट भुरंटादि १७ ,,	७३

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री श्रीमालादि २२ ,, ७३
श्रेष्टिवेद मुत्तादि ३० ,, ७३
संचेति आदि ४४ ,, ७४
अदित्यनाग चोरडियादि ८५ जातियों ७४
भूरि भटेवरादि २० जातियों ७५
भद्र समदडियादि २६ ,, ७५
चिंचट देसरडादि १६ ,, ७५
कुमट काजलीयादि १९ ,, ७५
डिडु कोचरादि २१ ,, ७६
कनोजियादि १७ ,, ७६
लघुश्रेष्टि आदि १६ ,, ७६
चरड–काकरीया ७७
सुघडगोत्र ७७
लुंग चंडालीया ७७
आर्यलुणावत ७७
गटिया, काग, गुरुड, सालेचा, वाग-
रेचा, कुकम चोपडा, सफला, नक्षत्र,
आभड, छावत, तुंड वाघमार, पछो-
डिया, हथुडीया, मडोवरा, मल, गुदे-
चा, छाजेड, राखेचा, ७८
अढारा गोत्रका यंत्र ७६
चार गोत्रका यंत्र ७६
अठारागोत्रका यंत्र ८०
कमलागच्छकी पोसालों ८२
कोरंटगच्छीय गोत्र ८३
तपागच्छीय ,, ८३
आंचलगच्छीय ,, ८४
मेलधारगच्छीय ,, ८४
पुनमियागच्छीय ,, ८४
नाणावालगच्छीय,, ८४
सुरांणागच्छीय ,, ८५
पल्लिवालगच्छीय ,, ८५
कंदरसागच्छीय ,, ८५
सांडेरागच्छीय ,, ८५
कर्मचंदवच्छावत ८६
श्रीपूजोंकी पोलिसी ८७

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीपार्श्वनाथाय नमः

महाजन वंस मुक्तावलिका किंचित्

' परिचय '

' महाजन वंस मुक्तावलि ' नामकी किताब बीकानेर निवासी उपाध्याय यतिवर्य्य रामलालजीने विक्रम सं. १९६७ निर्णयसागर प्रेस बंबईमें छपवाई थी पुस्तकका रंग ढंग अच्छा है और प्रस्तावना पेज पर लिखा है कि—

" इस किताबमें खरतरगच्छीय श्री पूज्यों और केइ विद्वानोंके पुराणे दफतरोंसे या ज्ञान भण्डारोंसे तथा वडा उपाश्रयसे प्राचीन इतिहास मीला सो मैंने इस किताबमें छपाया है + + + पुराणा इतिहास जैन धर्मियोंका जाननेकों यह ग्रन्थ अव्वल दर्जेकी कांति दीखाता है एसा ग्रंथ भारतभूमिमें कहां भी छपके प्रकाशमें नहीं आया तब मैंने परिश्रम कीया है इत्यादि "

यतिजी स्वयं वयोवृद्ध और अनुभवी है फिर खरतर गच्छीय श्री पूज्यों व विद्वानोंसे प्राचीन इतिहास मील जाने पर आपका ग्रन्थ क्रांतिकारी बन जाये इसमें शंका ही क्या है ? अगर यतिजी जैन जातिके बारामें इतना परिश्रम न करते तो जैन जातिका एसा इतिहास स्यात् ही प्रकाशमें आ सकता व जैन जातिका गौरव आपका ग्रन्थसे प्रगट हुवा है वह सदाके लिये अस्त ही हो जाता कारण जैन जातिका एसा प्राचीन इतिहास सिवाय खरतर यतियोंके मीलना ही असंभव था. इतना ही नहीं पर ऐसे इतिहासलेखक भी दूसरे गच्छोमें स्यात् ही मील सक्ते आपका बनाया हुआ ऐतिहासिक ग्रन्थ एसे प्रमाणोंसे प्रमाणिक है कि जिसको पढके आजके इतिहा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सवेत्ता विद्वानोंको क्षणभर मुग्ध होना पडता है. पर कमनसिब है जैन समाजका कि आज १५ वर्षमें कीसी साक्षर जैनोंने आपका सत्कार तक भी नहीं कीया क्या यह कम दुःखकी बात है ?

आपका नामके साथ " युक्तिवारिधि " की उपाधि भी लगी हुइ है वह भी केवल नाम मात्र की ही नहीं किन्तु आपने अनेक युक्तियों रचके वारिधि (समुद्र) भर दीया जिस्में कतीपय युक्तियोंका परिचय इस ग्रन्थमें दे अपनी उपाधिको ठीक चरतार्थ कर बतलाई है आपने इस ग्रन्थमें जीतनी जातियोंका इतिहास लिखा है जिस्में स्यात् ही कोइ जाति कमनसिब रही हो कि जिस्में आपकी युक्ति न हों ! उन युक्तियोंमें जो जो चमत्कार है उन सबके अधिष्टायक भी खरतराचार्यों को ही बतलाया है कारण एसे चमत्कारी आचार्य अन्य गच्छमें होना यतिजीकी बुद्धिके बाहार है यतिजीकी युक्तियों और चमत्कारका थोडासा नमूना तो देख लिजिये ।

(१) संचेति कटारीया रांका लुणिया संधि कटोतीयादि इन सब जातियोंके आदि पुरुषोंको सांप काटा था जिसका विष खरतरा चार्योंने उतारके जैन बनायें यहां पर इतना विचार अवश्य होता है कि अगर उन जातियोंवालोंको कदाच दूसरी दफे सांप काटा हो उसे कीसी गुस्साईजीने विष उतारा हो तो उनको गुस्साईजीके उपासक बनना पडा होगा एवं कीतनी वार सांप काटे और कीतनी वार धर्म बदलावे उनकी संख्या तो हमारे यतिजी ही कर सक्ते है अगर वह आचार्य नेपाल देशमें चले जाते तो लाखों करोडो श्रावक सहजमें कर सक्ते कारण वहां सांप बहुत है और बहुतोंको काटा करते हैं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(२) वरडिया डोसी सोनीगरा गेहलडादि को धन वतलाके जैन बनाये जिस्में गेहलडोकों तो दादाजीने ऐसा वास चूर्ण दीया कि एक कुंभारका कजावामें ५००० ईटां पर वास चूर्ण डालनेसे सब सोनाकी इंटा हो गई गेहलडोंने बडी भारी भुल करी अगर एकाद पर्वत पर वह चूर्ण डाल देता तो सब दुनियों जैन बन जाती स्यात् इतनी उदारता न होगी !

(३) कुंकड चोपडा लोढा जडिया आबेट खटोल रूणि-वालादिको पुत्र दे जैन बनाया उस जमानामें स्यात् कोई भाग्यहीन ही बांझडी रही होगी ।

(४) झाबक झांमड बाफणा मोहीवालादिको विजययंत्र दे संग्राममें विजय करवाके जैन बनाये. कमनसिब दिल्लिपति पृथ्वीराज चौहानका कि जिनकों एसा विजययंत्र न मीला जिससे आर्यभूमि म्लेच्छोंके हाथोंमे गई ।

(५) चोपडा राखेचा पुंगलीयाका कुष्ट रोग मीटाया । बांठीया शाह हरखावतोंका जलंधर रोग मीटाया । बाबेलादिका रक्तपीती रोग मीटाया । रूणीवालका क्षयरोग मीटाया । डागामालुका आधाशिसी का रोग मीटाया । बागाणी नेत्रोंका रोग मीटाके जैनी बनाया उस जमानामें बिचारा वैद्य हकीम तो घर बैठे हवा खाया करते होंगे ।

(६) चोरडीयोंका मुर्च्छित रोग मीटाया. भंसालियोंके मृतक पुत्रोंको संजीवन, दूसरा भंसालियोंके भूतको निकालके, आर्य गौत्रीकों गोलीका फूल तथा जलोपद्रव मीटाके, आधेरियोंको कैद छुडाके, डागा–सुता हुवा बादशाहका पलंग मंगवाके तथा सुवर्णसिद्धि रसायण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बताके रांकोंसे वल्लभीका भंग, बुरडोंको साक्षात् शिवजीका दर्शन करवाके श्रीश्रीमालोंमें एक बादशाहसे हिन्दु धर्मकी निंदा करवाके इत्यादि।

(७) लाजेडोंको ऐसा चूर्ण दीया कि मन्दिरोंके लाजा सोनाका हो गया अगर सब मन्दिर पर ही चूर्ण डाल देता तो कलि-कालमें एक भरत महाराज ही बन जाता।

(८) कांकरीयोको दो कांकरा दीया जिनसे चितोडका राणाकों पराजय हो भागना पडा अगर यह कांकरा पृथ्वीराज चौहान या राणा प्रतापके हाथ लग जाता तो लाखो मन्दिर और शास्त्रोंका विध्वंस क्यों होता ?

(९) बोथरा कोचर और वेद मुत्तोंकी ख्यातोंमें तो आप युक्ति मन्दिर पर सुवर्णका कलस चढा दीया और ध्वजादंडके लिये पोरवाड श्रीमाल और श्रावगीयोंकी युक्तियों तय्यार कर युक्ति मन्दिर-को सर्वांग सुन्दर बना दीया है। बलिहारी है यतियोंके इतिहासकी ॥

यतिजी जैसे जैन जातिके इतिहास ज्ञाता है वैसेही राजपुत्तोंके इतिहासके भी जानकार है। तुँवार पँवार पडिहार राठोड चौहान भाटी सोनीगरादिके इतिहासका परिचय भी आप अपने ग्रन्थमे ठीक दीया हैं नमूनाके तौर पर देखिये।

(१) भाटीयोंकी वंसावलि—युगल मनुष्योंसे प्रारंभ करी है राजा यादवसे यादव नाम हुवा राजा यादवके १३ वी पीढीमें राजा भाटी हुवा जबसे यादवोंका दूसरा नाम भाटी हुवा राजा भाटीकी १७ वी पीढीमें राव जैसल हुवा जिसने वि. सं. १२१२ में जेसलमेर वसाया. अर्थात् यादवराजाकी ३० वी पीढीमें राव जेसल हुवा. हिन्दु शास्त्रोंसे यादवराजासे जेसलराव तक ५००० वर्ष हुवा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और जैन शास्त्रोसे ८६००० वर्ष हुवा जिसमें यतिजी ३० पीढी खतम करी है बलीहारी है यतिजीके इतिहासकी ।

(२) पँवारोंकी वंसावलिमे राजधूमसे ११ वी पीढीमें सोमदेव हुवा जिससे पॅवार जाति हुई सोमदेवके पुत्र सोढलसे सोढा जाती हुई धूमराजाकी तीसरी पीढीमें राजा धीरके पुत्र पुंडरिककी सातवी पीढीमें राजा गन्धर्वसेन हुवा उसके बाद क्रमश; पंच विक्रम और पांच भोज राजा[1] हुवा अर्थात् धूमराजाके २१ वे पाट अन्तिम भोज हुवा धूमकी तीसरी सारवामें २७ वी पीढीमें भीन्नमालका भीमसेन राजा २८ वी पीढीमे उपलदेव राजा हुवा जिसने ओशीयों बसाई। आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिके उपदेशसे उपलदेवराजा जैन धर्म स्वीकार कीया इत्यादि। अब देखिये धूमराजा पँवारोके आदि पुरुष है यतिजी धूमकी ११ वी पीढीमें पँवार हुवा लिखते है साढा जाती विक्रमकी बारवी सादीमें हुई जिसको विक्रम पूर्वे ८०० वर्षमे हुई लिखी है करीबन् २००० वर्षका अन्तर है उपलदेवराजा विक्रम पूर्वे ४०० वर्ष में हुवा जिसकोतो २८ वी पीढीमें लिखा है और उपलदेवराजाके बाद १५०० वर्ष पीछे हुवा भोजको २१ वी पीढीमें लिखा है इसमें करीबन् १७०० वर्षोंका फरक है इसी माफीक चौहान राठोड पडिहार शिशोदीयोंकी वंसावलियों लिखी है इतना ही अन्तर जैन जातियोंके बारामें लिखा है वह सब इस समालोचनाके पढनेसे ज्ञात होगा यहां पर तो हम नाम मात्र परिचय कराया है अस्तु । "लेखक."

---

१ राजा भोजके देहान्त होने पर धारा तुँवरोंने छीन लीया बाद भोजके परिवार वालोसें जैन वरदीया जाति हुई ईस्का समय यतिजीने वी. सं. ९५४ का लिखा है.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रस्तावना.

प्यारे सज्जनगण !

कहनेकी आवश्यक्ता नहीं है कि इतिहास का अन्धेरामें इस पवित्र भारत भूमिपर एसा भी जमाना गुजर चुका था कि अज्ञ चारण भाट भोजकोंकी मनःकल्पित कथा कहानियों रासा और ख्यातों को इतिहास का रूपमें उच्चस्थान मील चूका था. व बडे बडे राजा महाराजाओंकी तवारिखोमें भी उन कल्पित ख्यातों कों सुवर्ण अक्षरों से अंकितकर उनपर ईश्वरीय वाक्योंकी माफीक पूर्ण विश्वास कीया जाता था. इतनाही नहीं बल्के महाशय टोंड साहब जैसे खोजी इतिहासकारोंने भी कीतनीक बातों मे धोखा खा अपनी कीताबों मे भी उनकल्पित बातों कों स्थान दे दीया था.

यह ही हाल हमारी ओसवाल जाति के बारामें हुवा। भाट भोजकोंने अनेक कल्पित ख्यातो वंसावलियों बनाके अज्ञ ओसवालों को धोखा दीया है जिस जातियोंके साथ भाईपा का सबन्ध नहीं था वहां तो भाईपा बना दीया जैसे सुराणा सांखलों के साथ सांढसीया लोका कुच्छभी संबन्ध न होने पर भी भाईपा लिख दीया और बाफणा जाघडों के भाईपा होने पर भी आपसमे सगपण करवा दीया इतनी ही गडबड कुलदेवियों और प्रतिबोधित आचार्यो के बारेमें कर दी है इस पर भी हमारे ओसवाल भाईयों को परवाही क्यों है ? वह तो उन भाटों की ख्यातोकों एक ईश्वरीय वचन ही मान बेठे है कीतनेक लोक तो अपने महान् उपकारी मांस–मदिरादि दुर्व्यसन छोडाने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वाले प्रतिबोधित आचार्यों का नामतक भूल कृतघ्नी बन सब तरहसे दुःखी बनते जा रहे है । इन भाट भोजकोंकी कथा कहानियां या इधर उधरकी सुनी हुई वातोके आधारपर यति रामलालजीने भी एक " महाजन वंस मुक्तावलि " नामकी कीताव बनाइ हैं जिस्में कीतनी सत्यता है वह इस समालोचना द्वारा ज्ञात हो जायगा ।

कुदरतका अटल सिद्धान्त हैं कि अन्धेरा के पीच्छे उद्योत भी हुवा करता है ईस नियमानुसार आज पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानोंने शोधखोलकर प्राचीन शीलालेखों ताम्रपत्रों सिक्काओ और प्राचीन ग्रंथो आदि इतिहास सामग्रीद्वारा अनेक पुस्तकों छपाके जनता के आगे रखदी है जिससे भाट भोजकोंकी कल्पित कथाओं तो क्या पर चंद-वरदाई के नामसे लिखा हुवा पृथ्वीराजरासा जैसा सर्वमान्य ग्रन्थको भी एक कौनेमे विश्राम लेना पडा तो हमारे यतिजीकी लिखी महाजनवंसमुक्तावलि के लीये तो खारा समुद्र के सिवाय अन्य स्थानही कोनसा है की जहांपर विश्राम ले !

यतिजीको ध्यान रखना चाहिये कि "बाबावाक्यं प्रमाणम्" का जमाना अस्ताचल पर चला गया और सत्यका सूर्य उदयाचल पर प्रकाश कर रहा है एसा प्रकाशका जमानेमें आपकी कल्पित कहा-नियोपर साक्षरलोग स्यात् ही विश्वास करेंगे यतिजीने खरतर श्रीपूज्यों या वडा उपाश्रय का नाम लिख जनता को धोखा दीया है दरियाफत करने पर ज्ञातहुवा की नतों एसा गप्पोंका खजाना श्रीपूज्योंके पास है ! न वडा उपाश्रयमें है सिर्फ उक्तस्थानोंको कलंकित करनेको ही नाम लिख मारा है यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि यतिजीने जैनोका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इतिहास नहीं लिखा पर इतिहासका खुन कीया है और अन्य लेखकों कि हांसी करवाई है ।

' महाजनवंसमुक्तावलि ' का इस वख्त हम दो विभाग करना चाहते है (१) चमत्कारी विभाग (२) ऐतिहासिक. जिस्मे चमत्कारी विभागको तो हम यहां पर ही छोड देते है कारण कीसी भी गच्छ में प्राभाविक आचार्य हुवा हो वह सब जैन समाजको भक्तिपूर्वक माननीय है दूसरा ऐतिहासिक विभाग पर हम इतिहास दृष्टिसे यहां पर समालोचना करेंगे ।

कलिकाल का एक यह भी नियम है कि असत्यवादियों को आखीर क्लेश का ही शरणा लेना पडता हैं स्यात् हमारे यति जी कि चिरकाल चली पोलका पडदा खुल जाने से या अपनीवृति का भंग होता देख अपने अन्ध भक्तों को बेहकावेगा कि देखो ! अपने दादाजी के बारे में कैसे कैसे लेख लिखदीया है ? इस के उत्तरमें मुझे पहलेसे ही कह देना चाहिये कि यतियोंकी उटपटांग वातों लिख मारनेसे नतो मेरी श्रद्धा दादाजी से हटती है न मेरी यह श्रद्धा है कि दादाजी जैसे महान् आचार्य यतिजीके लिखा माफीक अयोग्य कार्य करते थे और न मैने दादाजी के बारामे ऐसा कोई शब्द ही लिखा हैं बल्के यतियोंने दादाजीपर केइ प्रकारके अयोग्य आक्षेप कीया है जैसे झाडा झपटा यंत्र मंत्रादि जिनसे स्वपर मतवाले दादाजी की हांसी करते है "कि जैनोंके पूर्वाचार्य यंत्रमंत्र झाडाझुपटा औषध दवाइयो करतेथे " स्यात् यतिजी समझते होंगे की जैसे हम लोक दवाईदारू झाडा झपटा यंत्र मंत्र करते है वैसे ही पूर्वाचार्य करते थे पर यह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यतियोंकी समज गलत है दर असल दादाजी एसे गृहस्थ कार्य करनेवाले नहीं थे उन महात्माओंने जो कुच्छ कीया वह अपनी आत्मशक्ति और सदुपदेशद्वारा ही कीया था यतियोंने एक पापी पेटके लीये पूर्वाचार्यों पर अपनी प्रवृत्तिका आक्षेप कीया हैं उसीका प्रतिषेध इस समालोचनामें कीया गया है वह भी सप्रमाण न कि यतियों के माफीक कपोलकल्पित ।

अन्तमें यह निवेदन है कि मेने यह समालोचना कीसीके खंडनमंडनकी नियतसे नही लिखी है मेरा हेतु सत्यासत्यका निर्णय-काही है दूसरा मेरा हेतु यह है कि इन जातियोंका निर्णय होजानापर जो में "जैनजाति महोदय" कीताब लिख रहा हूं उसका भी मार्ग निष्कण्टक हो जायगा वास्ते हरेक निर्णयार्थी भाई इसे अपक्षदृष्टिसे पढे अगर इसमें कीसी प्रकारकी त्रुटी रही हो तो सज्जनताके साथ हमे सूचीतकरे ताकि द्वितीयावृत्तिमें सुधारा करवा दीया जाय इत्यलम्.

इससमालोचना के अन्दर प्रमाणमें दीये हुवे ग्रन्थोंकी सूची—

(१) राजपुत्ताना का इतिहास } कर्ता-रायबाहादुर पण्डित गौरीशंकरजी
(२) सीरोहीराज का इतिहास } ओझा.
(३) सिंधका इतिहास
(४) यवनराजओं का " } कर्ता—मुन्शी देविप्रसादजी.
(५) राजपुतानाकी सोधखोल
(६) भारत के प्राचीन राजवंस भाग १-२-३ कर्ता--साहित्याचार्य विश्वेश्वर नाथ रेउ—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(७) प्राचीनराजवंसावलिः कर्ता पं. पुरुषोतमदास गौड.

(८) टॉडराजस्थान हिन्दी अनुवाद कर्ता पं. बलदेवप्रसाद.

(९) पडिहारोंका इतिहास कर्ता-मुन्शी देवीप्रसादजी.

(१०) जैनगोत्रसंग्रह कर्ता-पं. हिरालाल हंसराज.

(११) जैनमत प्रबंध कर्ता-आचार्य श्रीबुद्धिसागरसूरिः

(१२) उपकेशगच्छ बृहत्पटावलि

(१३) खरतरगच्छ वंसावलि पत्रक.

अन्यभी केई प्रमाणिक ग्रन्थोका प्रमाण दीया गया हैं

वि० इतना नम्र निवेदन होनेपर भी कीसी भाइयोंको इस समालोचनासे राजी—नाराजी हो तो उसका कारण यतिजी रामलालजी ही है नकि में—मेने तो फक्त यतिजीकि लिखी मुक्तावलिपर सप्रमाण आलोचना ही करी है इसपर भी अनुचित हो तो क्षमाकी याचना करता हुवा में इस प्रस्तावनाकों समाप्त करता हुं.

" लेखक "

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ श्री

जैन जाति निर्णय प्रथमाङ्क

अथवा

महाजन वंस मुक्तावलि की

समालोचना.

" महाजन वंस १८ गौत्र और रत्नप्रभसूरिः "

महाजन वंस मुक्तावलि का कर्त्ता यतिवर्य्य उपाध्याय रामलालजीने अपनी किताब में जो-जो अनुचित बातें लिखी है उसे पूर्वपक्ष में रख उसका योग्य समाधान उत्तरपक्ष में किया जावेगा।

पूर्वपक्ष-रत्नप्रभसूरि एक साधु के साथ ओशीयो आये, भिक्षा न मीलने पर उस शिष्यने गृहस्थों की औषधि कर भोजन लाता था.

उत्तरपक्ष-यह बात बिलकुल गल्त है कारण रत्नप्रभसूरि ५०० मुनियों के साथ ओशीयों पधारे थे और भिक्षा न मीलनेपर तपश्चर्या करते थे देखिये प्राचीन पट्टावलि " श्रीमद्रत्नप्रभसूरी पंचसय शिष्य समेत लुणाद्रही समायाति " मासकल्प अरण्ये स्थिताः गोचर्या मुनीश्वरा व्रजंति परं भिक्षा न लभते लोकाः मिथ्यात्व वासिताः

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यादृशा गता तादृशा आगताः मुनीश्वरा पात्राणि प्रतिलेख्य मासं यावत् संतोषेण स्थिताः बाद सूरिजी विहार करने लगे तब देवीने विनती करी इसपर ३५ साधु विशेष तपश्चर्या के करनेवाले तो सूरीजीके पास चतुर्मास कीया शेष ४६५ मुनि विहार कर अन्य स्थान चातुर्मास कीया. **" गुरुः पंचत्रिंशत् मुनिभिः सहस्थिताः "** यतिजी स्वयं गृहस्थों की औषधि कर गोचरी लाते है वह आक्षेप चौदह पूर्वधारी आचार्यपर लगाके अपनी एबको छीपानी चाहते है।

पूर्व–रत्नप्रभसूरीने रूइ का सांप बनाके राजा के पुत्र को कटाया जिनसे सब नगरी में महान् दुःख हुवा फीर विषोत्तार जैन बनाये.

उत्त० यह भी गलत है चौदहा पूर्वधर एसे कार्य क्यों करे? नगरलोको को दुःखी क्यां बनावे? दर असल यतिजीने जैसा भाटों से सुना वैसाही लिखमारा है। न तो रूइ का सांप सूरिजीने बनाया न राजाके पुत्र को सांप काटा था। देखिये **" मंत्रीश्वर उहडसुतं भुजंगेन दष्टाः "** यतिजी लिखते है कि सांप से विष खेंचाया था यह भी गल्त है **" गुरुणा प्रासु जलमानीय चरणौ प्रक्षाल्य तस्य छंटितं सहसात्कारणे सज्जोविभुव "**

पूर्व–उपलदे राजा जैनी भया सुनके भिन्नमाल का राजा भी जैनी भया और ओशीयो तथा भिन्नमाल में एक साथ मन्दिर की प्रतिष्ठा रत्नप्रभसूरिने कराई.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्त० यह भी निर्मूल है न तो भिन्नमाल का राजा जैन हुवा न वहां मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई ओशीयों के साथ कोरंटनगर में प्रतिष्ठा हुई थी वह मन्दिर भी अभी तक मौजुद है देखिये.

उपकेशे च कोरंटे तुल्यं श्रीवीर बिंबयों ।
प्रतिष्ठा निर्मिताशक्त्या श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥ १ ॥

पूर्व–ओसवाल होनेका समय २२२ वर्षो की गनती में ओशीयों का मन्दिर बनने में १० वर्ष लागा लिखा है.

उत्त० २२२ वर्ष की गीनती भी मिथ्या है और ओशीयो का मन्दिर बनने में १० वर्ष लागा लिखा सो भी निर्मूल है कारण मन्दिर पहले से तैय्यार था पर नारायण के नाम से सम्पुरण नहीं होता था तब सूरिजीने महावीर का नाम से बनाने की सूचना करी बाद मन्दिर तय्यार हो गया वीरात् ७० वर्षे मगशर शुक्ल ५ मि गुरुवार ब्रह्मण मुहूर्त्त में आचार्य रत्नप्रभ-सूरिने प्रतिष्ठा करी.

पूर्व–वि. सं. १०८० पाटण का दुर्लभराजा की सभा में जिनेश्वरसूरि और चैत्यवासियों में चर्चा हुइ जिस्में राजा दुर्लभने जिनेश्वरसूरिजीकों खरतर बिरुद दीया और चैत्यवासियोंकों कउलया (कवला) शब्द से तिरस्कार कीया इत्यादि.

उत्त० अव्वलतो १०८० में पाटण में दुर्लभराजा का राज ही नहीं था दूसरा १०८० जिनेश्वरसूरि जाबलीपुर (जालौर) में हरिभद्रसूरि कृत अष्टकपर टीका लिख रहे थे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीसरा आत्मप्रबोध की भाषा कर्त्ता गणी क्षमाकल्याणजी लिखते है कि १०८० में जिनेश्वरसूरि जाबलीपुर में कर्चुरपुरीया गच्छ-वालों के साथ शास्त्रार्थ कीया चोथा जिनेश्वरसूरि अभयदेवसूरिने अनेक ग्रन्थ लिखा है उन्होंने कहांपर भी अपने नाम के साथ खरतर शब्द नहीं लिखा है पांचवा खरतरगच्छीय पं. साधुरत्न गणीने सार्ध शतक की बृहत्वृत्ति में लिखा है कि आचार्य जिनदत्त-सूरि को कोइ भी प्रश्नादिक पूछते थे तब सूरिजी बडी मगरूरी और खराई के साथ उत्तर दीया करते थे जबसे लोक खरतरा २ कहने लगा. इत्यादि प्रमाणोंसे यतियों का लिखना बिलकुल मिथ्या है दर असल चौरासी चैत्यों का मालिक वर्धमानसूरि का शिष्य जिनेश्वर सूरि उपकेश गच्छाचार्य देवगुप्तसूरि के पास ज्ञानाभ्यास कर आप का उपदेश से चैत्यवास का त्याग कर क्रिया उद्धार कीया था जिस उपकार का बदलामें यतियोंने यह अपकार लिखमारा है विशेष खुलासा " जैन जाति महोदय " नाम की किताब में लिखा गया है.

पूर्व–एक पंचप्रतिक्रमण की किताब में यतिजीने लिखा है कि रत्नप्रभसूरि स्थापित १८ गोत्रों से एक हटीले वैद वर्ज के शेष १७ गोत्र अपना गच्छ को चैत्यवासी समज खरतर गच्छ में आ गया बाद वेदों से भी आधा गौत्र खरतर को मानने लग गया।

उत्त० यतिजी ! वि. सं. १०८० में करीबन् १२ क्रोड जैन संख्या थी जिस्में विशेष ओसवाल उपकेशगच्छीय ही श्रावक थे कारण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

खरतराचार्य तो बाद में हुवा था १७॥ गौत्र खरतर हो गया था तो क्या एक ग्राम में हुवा था या सर्व भारत में खरतर दुवाई फीर गई थी? अगर स्वगच्छ को चैत्यवासी समझ के ही अपना गच्छ छोडा था तो एसा कोनसा गच्छ है की जिस्में चैत्यवासी न हुवा हो। उस समय तो उपकेशगच्छ के हजारों मुनि त्यागी वैरागी भूमंडलपर विहार करते थे खेर फीर खरतरगच्छ में कोनसी त्रुटी हुई जिनसे वह १७॥ गौत्र वापीस उपकेशगच्छ को गुरु मानने लग लये आज भी मान रहे है और आप देख रहे है यतिजी! आज की दुनीयों एसे द्वेष कदाग्रह कों हजार हाथ से नमस्कार करती है गच्छ कदाग्रह को छोड दुनियों एक रूप में हो जैन कहलाने में ही अपनी उन्नति समजती है एसी और भी बहुतसी अनुचित बातें लिख मारी है पर इस समय हमे इतना अवकाश नहीं है और आज का समय भी एसी द्वेषकी बातो कों नहीं चाहाता है। वास्ते हम खास मुद्दे की बातों पर ही समालोचना लिखेंगे।

(१) संचेतीगौत्र।

बारघिजी लिखते है कि दिल्लि नगरमें सोनीगरा चौहान राजाका पुत्र बोहित्तको सांप काटा वहांपर वि. सं. १०२६ मे वर्धमानसूरि आये विषोत्तर जैन बना संचेतीगौत्र थापन कीया और श्रीपालजी जैन सम्प्रदायशिक्षामें सांपकाटनेका नहीं लिखा है।

समालोचना—अव्वलतो दानो यतिजी लिखते है कि हमारे प्राचीन दफतरोंसे यह ख्यातो लिखी है जिस्मे कीतना अन्तर है दर असल जिनके दीलमें आया वैसे लिख मारा, दूसरा १०२६ में

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिल्लिपर चौहानोंका राज ही नहीं था पुत्रका नाम तो यतिजीने लिखदीया पर राजाका नाम यतियोंके दफतरवालोंको यादतक भी नहीं था. दर असल वि. स. ८४८ से १२२० तक दिल्लिपर तुँवरोंका राज था १२२० मे अजमेरके विशलदेव चौहानने दिल्लिका राज छीन लीया १२४९ तक अन्तिम सम्राट् पृथ्वीराज चौहानका राज था तब यतिजी १०२६ में दिल्लिपर चौहानोंका राज लिखते है वह भी विलकुल गल्त है आगे चौहानों के साथ सोनीगरोंकी उपाधि भी १०२६ मे नहीं थी कारण नाडोलका चौहान राव आल्हणदेव के तीन पुत्रोंसे कीर्तिपाळको १२ ग्राम जागीरीमें दीया था बाद कीर्तीपालने अपने भुजबलोंसे जालौर के कुंतुपाल पँवरका राज छीन के वि. स. १२३६ में जालोर अपने आधिन कर सोनगीरी पाहाड पर कील्ला बन्धाना शरू कीया। कीर्तिपालके बाद उनका पुत्र राव समरसिंह राजगादी बेठा उसने सोनगीरीका अधुरा कीला को सम्पुर्ण कराया तबसे चौहानों के साथ सोनगरोंकी उपाधि लगी। पाठक वर्ग विचारे कि चौहानों के साथ सोनागरोकी उपाधि वि. स. १२३६ के बाद लगी हुई तब यतिजी १०२६ मे दिल्लिमें सोनीगरोंका राज वतलाते है क्या यह मिथ्या नहीं है? अब आचार्य वर्धमानसूरिका समयको देखिये वि. १०८८ में वर्धमानसूरि आबुपर विमलशाहाका मन्दिरकी प्रतिष्टा करी थी और १११० आसपासमें आपका स्वर्गवास हुवा वास्ते १०२६ मे वर्धमानसूरिका होना भी असंभव है यह सब ख्यातही विगर पैर की है नतो दिल्लिमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उस समय चौहानोंका राज था न उस समय चौहानोंके साथ सोनीगरोंकी उपाधि थी न उस समय वर्धमानसूरीका होना साबित होता है दर असल वीरात् ७० वर्ष ओशीया नगरीमे आचार्य रत्नप्रभसूरिने १८ गोत्रमें १० वा गोत्र संचेती स्थापन कीया था. संचेती सुचेति साहाचेती आदि ४४ शाखाएं एक संचेती गोत्रसे हुई है संचेतीगोत्र की वंसावली आजतक उपकेश (कमला) गच्छीय महात्मा लिखते आये हैं जहांपर कमलागच्छाचार्यों का विहार न हुवा वहां कीतनेक संचेती क्रिया तपा खरतर ढुंढीया तेरापंथीयोकी करने लग गये है इनसे उन जातिका मूल गच्छ बदल नहीं सक्ता है संचेतीयोंका मूल गच्छ तो कमलागच्छ ही है यतियोंकी गप्पों पर कोइ संचेती विश्वास न करेंगा.

(२) वरदीया-वरडिया।

वारिधिजी लिखते है कि धारानगरीका राजा भोज परलोक होने पर धारा तुंवारो ने छीन ली तब भोजकी ओलादवाला लक्ष्मणादि केकइमें वास कीया वहां पर वि. सं. ९५४ में नेमिचन्द्रसूरि आये लक्ष्मणने धन संतानकी याचना करी सूरीजीने कहा कि तुम जैन धर्म पालो तो में धन बतला देता हुं। लक्ष्मणने स्वीकार कर लीया सूरीजीने लक्ष्मणके मकानके पीछे धन गडा हुवा था वह बतला दीया और तीन पुत्र भी दे दीया जिस्में नारायणकी ओरतने अपने पीहरमें एक युगलको जन्म दीया उनमें एक पुत्री थी दूसरा पुत्र सांपकी सीकलसा था बाद पुत्री एकदा चुल्हामें आग लगाती थी आगे चुल्हामें पुत्र सुता था वह भस्म हो व्यंतरदेव हुवा उसने शाप दीया कि वरडियोंके घरमें पुत्री जन्मेगी वह सुखी न रहेगी कीसीने कहा कि हमारी कम्मरमें दर्द हैं व्यंतरने कहा कि लक्ष्मणके मकानकी भींतसे स्पर्श करनेसे हरक रोग चला जावेगा इत्यादि और श्रीपालजी लिखते है कि वि. सं. १०३७ में वर्धमानसूरिने वरडिया बनाया हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समालोचना–अव्वलतो दोनों यतियोंमे आचार्यका तथा समयका कीतना अन्तर है ? आगे एक यति कहता है कि धन तो था परं संतान नहीं था दूसरा लिखता है कि धनसंतान दोनों नहीं था फिर भी दोनों कहते है कि हमने प्राचीन इतिहाससे लिखा है तो हम कीसको सत्य समजे ? इतिहासकी तरफ देखते है तो दोनोंका लेख निर्मूळ–मिथ्या है। कारण वि. स. ९५४ मे न तों धारा पर राजा भोजका राज था न धारा तुंवारोने छीनली थी न उस समय वरदिया जाति हुई थी देखिये शिलालेखोंद्वारा धाराके पँवारांकी वंसावलिः—

वि. सं. ९५४ में धारापर भोजका राज तो क्या परं भोजका जन्म ही नहीं था और भोजके पीछे तँवरोंका राज भी धारापर नहीं हुवा

धाराका राजवंस.

उपेन्द्र (कृष्णाराज) (९२०)
|
वैरीसिंह (प्रथम)
|
सीयल (प्रथम)
|
वाक्यपति (प्रथम)
|
वैरीसिंह (दूसरा)
|
सीयक (दूसरा) (१०२९)
|
वाक्यपति (दूसरा) (१०६१)
|
सिन्धुराजा
|
भोजराजा (१०९९)
|
जयासिंह (१११२)
|
उदयादित्य (९९४३)
|
लक्ष्मण (११६१)
|
नरवर्मा (११६४)
|
यशोवर्मा (११९२)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

था देखो उपरकी वंसावली: न जाने यतियोंने नशाके तोरमें एसा असत्य लेख क्यो लिखा होगा ? स्यात् वरडियोंपर हुकुमत चलानी होगा कि तुमारे पूर्वजों को हमारे आचार्योंने धन संतान दीया था पर दुर्दशातों वरडियोकें घरमें जन्म लेनेवाली पुत्रीयों की है वहां सांपके कारण विचारी जन्मभर दुःखी रहेगा ? परं नगरके लोगोंका अहोभाग्य है कि लक्षमणकी भिंतही उनके लिये हकीम बनगई थी न जाने विचारे वैद्य हकीमोका क्या हाल हुवा होगा ? दर असल वरडिया जाति नागपुरिया तपागच्छके श्रावक है नागोरका पुनडश्रेष्ठिने विक्रमकी बारवी सदीमें सिद्धाचलजी का वडा भारी संघ निकाला था जिसके अन्दर १८०० गाड़ीयों १००० सेजपाल १२०० बेल ५०० वाजंत्र बहुतसे साधु साध्वियां और देरासरों था वस्तुपाल तेजपाल जिनोंका अच्छा सत्कार कीया था. वहांपर चक्रेश्वरीदेवीने वरदान देनेसे वरडिया जाति हुई है चामड रूणिवालभी इस जातिकी शाखावों है विशेष खुलासा वरदियोंकी वंसावलियों और महात्माओंकी पोसालोंसे मील सक्ता है ।

(३) कुकड चोपडा गणधर चोपड—

वा. लि. मंडौरमें पडिहार (इंदा साखा) राजा नांनुदे राज करता था वहां पर जिनवल्लभसूरि आये राजाने अर्ज करी कि मेरे पुत्र नहीं. सूरिजीने कहा एक पुत्र हमको दे देना में तुमकों पुत्र दे देता हूं। राजाने स्वीकार कीया पुत्र हो गया परं सूरिजीका स्वर्गवास हो जानेके बाद जिनदत्तसूरि आये पुत्र मंगा, राजाराखिने पुत्र नहीं दीया. सूरिजी विहार कीया पर आपके प्रभावसे पुत्रको कुष्ट रोग हो गया बाद गणधर कायस्थकी अर्जसे सूरिजी वापिस पधारे कुंकडी गायका मक्खनकी मालस करनेसे पुत्र आरोग्य हो गया राजा जैन धर्म स्वीकार कीया जाति कुकड चोपडा तथा गणधर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कायस्थ जैनी होनेपर गणधर चोपडा जाती हुइ ईत्यादि — और यति श्रीपालजी लिखते है कि वि. स. ११५२ मे जिनवल्लभसूरीने पडिहार नानुदे राजाका पुत्र धवलचंद्रका कुष्टरोग मीटाके जैन बनाया.

समालोचना—श्रीपालजी वि. स. ११५२ जिनवल्लभसूरि और रामलालजी जिनदत्तसूरि ११७९ के आसपास में चोपडा बनाया लिखता है इसमे सत्य कोन ? इतिहास दृष्टिसे दोनों असत्य है कारण इन दोनोंके समय न तो मंडोरमे कोइ नानुदे राजा था और न पडिहारोंमे इंदाशाखाका जन्मभी हुवाथा इतिहास कहता है कि—

रावरघुराज ११०३
|
,, सज्हाराज
|
,, संबरराज
|
,, भुपंतिराज
|
,, अखेराज
|
,, नाहाडराव (१२१२)

इन सो वर्षोंमें नानुदे राजाका नाम निशान तक नहीं है प्रसिद्ध पडिहार नाहाडरावने वि. स. १२१२ मे पुष्करका तलाव खोदायाथा नाहाडरावकी पांचवी पीढीमे अमायक राजाके १२ पुत्रों से साधकरावका पुत्र इंदासे पडिहारोंमे इंदा साखा चली इनका समय १३३४ के आसपास है यतिजी ! आखों बन्धकर जरा सोचना तो था कि १३३४ में इंदा साखा हुइ तब ११५२ मे इन्दा साखाका राजा नानुदेको कैसे प्रतिबोध दीया होगा यतिजीने यहभी निर्णय नहीं कीयाकि वल्लभसूरिकी पुत्र उधाई दादाजीने वसुल करी या राजाको वैसा ही करजदार रख दीया दर असल कुंकड नहीं परं कुंकम चोपडा धूपियादि उपकेश—कमलागच्छीय श्रावक हैं कुंकड चोपडा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गणधर चोपडादि जातियों इनोंकी अन्तर शाखाओं है देखो " जैन जाति महोदय "

(४) धाडीवाल गौत्र ।

वा. लि. गुजरातमें डिडुजी नामका खीची, राजपुतोंको साथ ले धाडा पाडता था पाटणका सिद्धराज जयसिंह पकडनेका बहुतोपाय कीया पर हाथ नहीं आया एकदा पट्टणका राजखजाना लुट लिया सिद्धराजने २०००० सवारोंको भेजा उस समय डिडुजी उंझाग्राममें चोरीका माल वेचता था जब २०००० सबारोने उंझा ग्रामके चौतर्फ घेरा लगा दीया उस समय जिनवल्लभसूरिने वासक्षेप दे दीया की वह धाडायती २०००० सवारोकों पराजय कर अपने पावों लगाया इस वातको सुन पाटणपति डिडुजीको ४८ ग्राम इनाममें दे अपना सामन्त बनाया डिडुजी जैनी हुवे जीनकी धाडीवाल जाति थापन करी इत्यादि–

समालोचना--अव्वल तो यह वात असंभव है कि जैनाचार्य एसे धाडायतियोंकी सहायता करे व अधर्म्मयुक्त कार्यमें मददगार बन उसे वासक्षेप देवे वहभी एसा कि सत्यका पराजय करनेवाला. दूसरा सिद्धराज जयसिंह एसा निर्बल नहीं था कि एक धाडायति अपनें २०००० सवारोकों पराजय करनेवालेको ४८ ग्राम इनाम में दे जिसकी गन्धभी तवारिखोंमें न मिले । यतिजी इस ख्यातके लिखने पहले जरा पट्टणका इतिहास पढ लेते तो ज्ञात हो जाता कि सिद्धराज जयासिंह एक सामान्य राजा था ? या उनके नाम मात्रसे वडे वडे राजा गभराते थे वह राजा एक धाडायतीसे घवराके ४८ ग्राम दे दे यह सर्वथा असंभव है दर असल विक्रमकी इग्यारवी शताब्दीमें पाटणका राजा भीमके समय आबुपर एक डिडु नामका पँवार गुजरातमें धाडा कीया करता था उसपर राजा भीमका कोप होनेसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वह धारानगरीका राजा भोजके सरणे चला गया था स्यात् यतिजीने उसकी कथा सुन धाडायति के नाम पर धाड़ीवालोंकी ख्यात लिख मारी है पर कहां तो डिडु धाडायतीका समय और कहां जिनवल्लभसूरिका समय डिडुके समय जिनवल्लभसूरिका जन्मभी नहीं था. अर्थात् १०० वर्ष का अन्तर है धाडिवाल जाति कोरँटगच्छाचार्य प्रतिबोधित है देखो " जैन जाति महोदय "

(५) झाबक झामड झंबक जाति—

श्रीपालजीने अपनी कीताबमें इन जातियोंको खरतर होना नहीं लिखा जब रामलालजी लिखते है कि झबआ नगरमें राठोड झाबदे राजा चार पुत्रोंके साथ राज करता था वहांपर वि. स. १५७५ में जिनभद्रसूरि आये राजाने भक्ति करी कारण राव सीहाजी आसस्थानजीनेभी जिनदत्तसूरिकी भक्ति करीथी दादाजीने उनका भविष्यभी बतलायाथा. अस्तु। यहां झाबदे राजापर दिल्लिके बादशाहका हुकम आया कि टाटिया भील मेरा हुकम नहीं मानता है वास्ते तुम उसे पकड लावेंगे तो तुमे ईनाम दीया जावेगा, राजा सूरिजीके पास आया सूरिजीने राजाकी अर्ज सुन एक यंत्र कर दीया राजाने यंत्रको झंघा चीर अन्दर घुसा दीया यंत्रके प्रभावसे भीलको पकड बादशाहके पास भेज दीया बादशाहसे ईनाम पाया. राजा एक पुत्रको तो राजकेलिये छोड दीया बाकी तीन पुत्रोंके साथ जैनी बन गया तीन पुत्रोंके नामसे झामड झाबक झंबक एवं तीन जातियों स्थापन करी.

समालोचना—अव्वलतो वि. सं. १५७५ में झबआ नगरही नहीं था इतिहास कहता है कि इ. स. १६ वीं शताब्दीमें लाभाना जातिके झबु नायकने झबआ बसाया था बाद वि. स. १६६४ मे बादशाहा जहाँगीरने राठोड केशवदासको झबआ इनाममे दीया था जब १६६४ में राठोडोंका राज झबआमें हुवा तब १५७५ में

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राठोडोंको प्रतिबोध देना कैसे सिद्ध हो सकता है--अब राठोड केशवदास कोन था इसके बारामें जोधपुर तवारिखमें लिखा है कि राव जोधाजीके पुत्र वरसिंहजी के पांचवी पीढीमें केशवदासजी हुवा

रावजोधाजी
|
वरसिंहजी
|
सीहाजी
|
जयासिंहजी
|
रामसिंहजी
|
भीमसिंहजी
|
केशवदासजी

है यतिजीको जरातो विचार करना था कि बिलकुल झूटी बातोंसे झावक झामड कैसे मान लेगा कि हमारे गुरु खरतर है। आगे देखिये दादाजीका स्वर्गवास वि. सं. १२११ में हुवा था उस समय रावसीहाजी तथा आसस्थानजीका जन्म ही नहीं था. तो दादाजीकी भक्ति कीसने करी और दादाजी कीसको भविष्य वतलाया वि. स. १२८२ में राव सिंहाजी मारवाडमें आये थे आसस्थानजीका समय १३३० का है तब दादाजीका स्वर्गवास समय १२११ का है पाठक सोच सकेगा कि यतियोंने कीधरकी ईंट कीधरका पत्थर जोड ढांचा खडा कीया है दरअसल झांमड झावक तपागच्छाचार्योंके प्रतिबोधित श्रावक है खराडी बलुंदाके कुलगुरु झांमडोंकी वंसावलि लिखतेहै विक्रमकीअग्यारहवीसे चौदहवी शताब्दीमें कीये हुवे झांमडोंके सेंकडो धर्मकार्यों तथा पन्दरवी शताब्दीमें भंवल ग्राममें बाहारसे आके झामड़वास कीया इत्यादि प्रमाणोसे यतियों का लिखना निर्मूल और आकाश कुशमवत् है। झांमड झावक तपागच्छके है

(६) बांठीया ब्रह्मदेवका शाहा हरखावतादि

वा० लि० रणतभौवरके पँवारराजा लालसिंहके पुत्र ब्रह्मदेवको जलंधरका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रोग हुवा था वि० सं० ११६७ मे जिनवल्लभसूरिने चिकित्सा कर जैन बनाया. लालसिंहका वडा पुत्र बांठा था जिसका बांठीया ब्रह्मदेवके ब्रह्मेचा लालाके लालाणी हरखाके हरखावत उदयसिंहको भरूचके नबाबने शाह पद्दि दी ++ चीमनवांठीया वि० सं० १५०० हमायू बादशाहाकी फोजमें लेनदेन करता था मुशलमानोके सोनाका वरतन पीतलके भाव ले लेनेसे बहुत धनाढ्य हुवा संघ निकलके अकबरी मोहरकी लेण दी इत्यादि

समालोचना—अव्वलतो विक्रम कि बारहवींशताब्दीमें रणथंभोर पर पँवारोका राज होना कीसी इतिहाससे सिद्ध नहीं होता है किन्तु रणथंभौर चौहानोंका राज सिलालेखोंसे सिद्ध है दूसरा वि० सं० १५०० में हमायूका राज तो क्या पर जन्म भी नहीं था वि. सं. १५८७ में हमायू दिल्लिका बादशाह था आगे चीमनबांठीयाके बारामें जैन एसे धोखाबाज न थे की सोनाका वरतन पीतलके भाव में ले ले ! क्या मुसलमान एसे मूर्ख थे की चीमनबाडीयाकों सोनाका वरतन पीतलके भावमें दे दे ते थे ? क्या यातिजी ! वह वरतन रात्रिमें देते थे या दिनमें? यतिजीने राजा लालसिंहके पुत्रोसे बांठीया ब्रह्मेचा लालाणी शाहा हरखावत जातियो होनी लिखी है जब तपागच्छीय कुलगुरुओंकी वंसावलिमें लिखाहै कि आबुके पास प्रामा ग्रामके पँवार राजा मधुदेवको वि. सं. नागपुरिया तपागच्छाचार्य भावदेवसूरिने प्रतिबोध दे जैन बनाया बाद वि. सं. १३४० में कवाड जाति १४९९ में बांठीया १६३१ शाहा हरखावत जातिनिकली पाठकवर्ग यतिजीका समय ओर इन जातियोंका समयका मीलान करे कि कीतना अन्तर है अजमेर वाले धनरूपमलजी शाहाके पास खुर्शी नाम तैय्यार है बांठीयादि का गच्छ तपा है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(८) चोरडीया गुलेच्छा पारख बुचा सावसुखादि

बा० लि० पूर्व देश चंदेरी नगरी में राठोड राजा खरहत्थ राज करता था उस समय राठ लोकोकी फोज संग ले यवन लोक काबलि मुल्क लुंट रहे थे. यह बात खरहत्थराजाको खबर होते ही अपने चार पुत्रको संग ले काबुलमे जा यवनोंसे संग्राम कर घनछानके भगा दीया पर अपने चारो पुत्र मुर्छित हो गये उनको चंदेरीमे लाये जीने की आशा छुटी ×× जिनदत्तसूरि पधारे धर्म पालनेकी शर्तपर चारो पुत्रोंको हुसीयार कीये राजापुत्रों सहित जैनधर्म स्वीकार कीया उन चारों पुत्रोंके अलग अलग गौत्र स्थापन कीया, आमदेवका चोरडीया, निंबदेवका भटनेरा, चोधरी भैसाके पांच ओरतोके प्रत्येकपुत्रोंसे क्रमशः पारख बुचा सावसुखा गदईया (०) चोथा आसलका आसांगी × आगे भैसा शाहाके संघका बारामें कागद काला कीया है।

समालोचना—अव्वल तो चंदेरी पूर्वमें नहीं किन्तु मालवा में है दूसरा चंदेरीमें राठोडोंकाराज नहीं किन्तु चेदीवंसीयोंका राज था. राठोडोंका इतिहास विक्रमकी पांचवी शताब्दी से आजतक का तय्यार हो चुका परं चंदेरीमें कीसी राठौडोंका राज होना पाया नहीं जाता है अगर सामान्य व्यक्ति हो तो इधर उधर गुप्त रह सक्ती है परं एक शूरवीर–साहासिक जो काबुलका रक्षण करने-वाला चार पुत्रोंके साथ हजारों यवनोसे धन छीन कर मार भ-गानेवाला राजा खरहत्थ कोनसी गुफामें गुप्त रह गया की कीसी इतिहासकारोंने या वीररस पोषक भाटोंने जिसकी जिक्र तकभी नहीं करी ! वारीधिजीने यह खुलासा नहीं कीया कि खरहत्थराजा पुत्रों सहित जैन बन जाने के बाद चंदेरीका राज कीसको अर्पण कीया ? यतिजी, उस जमानामें विदेशीयोंके हुमलोंसे हिन्दुस्ता-नका रक्षण करना तो एक बडा भारी प्रश्न हो गया जिस्में खरहत्थ काबलि मुल्कका रक्षण करनेको गया क्या कोइ विद्वान इस बा-तको मानेगा ? आज साक्षर चोरडीया गुलेच्छा पारखादि आपकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कल्पित कथाओं पर स्यात्ही विश्वास करें। अस्तु। दर असल उस समय चंदेरी नगरीमें चेदीवंशी राजा करणका राज था इतिहास कहता है कि वि. सं. ११६४ में पाटणका सिद्धराज जयसिंहने चंदेरीपर चढाई करी थी चंदेरी का राजा करणको पराजय कर एक सोनाकी पालखी दंडमें ली वह पालखी पाटणपतिने सोमनाथ महादेवको अर्पण करी थी बाद वि. सं. १२०६ में सोरठ पतिने चंदेरीपर चढाई करी उस समयतक चंदेरीमें राजा करणका ही राज था अर्थात् वि. सं. ११६४ से १२०६ तक चंदेरीमें चेदीवंसियोंका राज था जब यतिजी वि. सं. ११७६ में दादाजीने चंदेरीके राठोड राजाको प्रतिबोध दीया लिखा यह बिलकुल मिथ्या निर्मूल नहीं तो और क्या है? दरअमल दादाजी जिनदत्तसूरीके करीबन् १६०० पहिले आचार्य रत्नप्रभसूरिने ओशीयोंमें महाजनवंसके १८ गोत्र स्थापन कीया था जिस्में ११ वा गोत्र 'आदित्यनाग' स्थापन कीया था जिसकी साखा चोरडीया गूलेच्छा पारखादि है यतिजीने भी अपनी कीताबमें १८ गोत्रोंके अन्दर "अइच्चणागा" अर्थात् "अदित्यनाग" गौत्र रत्नप्रभसूरि स्थापन कीया लिखा है और सिलालेखों में भी चोरडीयोंका मूल गौत्र आदित्यनाग ही लिखा जाता था एक सिलालेख नमूनाका तौर पर यहांदरज कर दीया जाता है वह जैनमूर्त्तिपर खुदा हुवा है।

"सं १५६२ वै० शु० १० रवि० श्रीउकेशज्ञातिय श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरडिया साखायां व० डालणपुत्र रत्नपालेन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सवतव धधुमलपुत्रेन मातृपितृ श्रे० श्री **संभवनाथ** बिंब प्र. श्रीउकेशगच्छे कुंदकुंदाचार्य० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः " (श्रीमान् पुरणचंदजी नाहारका छपाया हुवा सिलालेख संग्रहसे) यतिजीने चोरडियादिको स्वतंत्र जाति लिखी है पर इस सिलालेखसे यह सिद्ध होता है कि चोरडिया जाति स्वतंत्र नहीं किन्तु आदित्यनाग गोत्रकी एक साखा है इसी माफीक चोरडियोंसे गुलेच्छा पारखादि ८५ साखायें निकली है वह सब कमलागच्छवालोंको ही गुरू मानते है हां कहांपर कमला गच्छवालोंका विहार नहीं हुवा वहांपर अज्ञ लोक अन्य गच्छकि क्रिया करने लग गये पर उनकी वंसावलियों तो आज पर्यन्त कमलागच्छके महात्मा कुलगुरु ही लिखा करते है। अस्तु।

एक खरतरगच्छकी पट्टावलि इस समय मेरे पास है वह ३५ फीट लम्बी १ फीटकी चौडी है जिस्में गुलेच्छोंकी उत्पत्ति इस माफीक लिखी है करथोजी (चोरडीया) गालुग्राममे वसीया क्रमशः उनकी २७ पीढी करथो. आमदेव–लालो–कालु–जाणग–करमण सेरूण–जालो–लाखण पाल्हण–आलपाल–भोमाल–वीदेव–जेदेव पददेव–बोहित्थ-जैसो–दुरगो–सीरदेव-अभेदव--महेस-कालु-सोमदेव–सोनपाल–मुशल–साहादेव–गुलराज. एवं २८ गुलराज गोलुग्रामसे वि. स. ११८४ में निकलके (नागोर) वास कीया "जदसु गोलेच्छा कहांणा" अगर २७ पीढीका ७०० वर्ष बाद करदे तों खरतरपट्टावलिसे भी विक्रम सं. ४०० तकतो चोरडिया मोजुद थे तो ११७९ में दादाजीने चोरडीया बनाया कैसे सिद्ध हो सके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्थात् यतिजीका लिखणा मिथ्या है उसी पट्टावलिमें एक बात और भी महत्वकी लिखी है वह यह है कि उपकेशाचार्य देवगुप्त-सूरिकी बहेन सुगनीबाई खरतराचार्य जिनचन्द्रसूरिके पास दीक्षा ली थी बाद श्रावणपूर्णिमाके रोज जिनचन्द्रसूरि उस सुगनी साध्वी को राक्खीदे देवगुप्तसूरि के पास भेजी साध्वी अपनेभाई आचार्य को बन्दनकर राक्खी को आगे रखी, सूरिजीने कहा साध्वी यह राखी कीस वास्ते ? साध्वीने कहा आप हमारे संसार पक्ष के भाई है वास्ते मे राक्खी बन्धनेको आई हुं सूरिजीने राखी ले के कहा कि में तुझको क्या देउं ? इसपर साध्वीने कहा कि आपके महाजनों का बहुत गोत्र है उनसे गुलेच्छा पारख बुचा सावसुखा एवं चार गोत्र हमको दे दिरावे ? इसपर उदारवृत्तिवाला आचार्यने उक्त चार गौत्र सुगनी साध्वीको राखीका दानमें देदीया यह जिक्र बीकानेरमें विक्रमके सतरवी शताब्दीकी है अगर इस घटनाको सत्य मानली जावे तो एक बीकानेर के लिये ४ गोत्रदे भी दीया हो तो भी उनके मूलगच्छ तो उपकेशगच्छ (कमला) ही है ।

आगे भैसाशाहाका संघके बारामें यतिजीने कागद काला कीया है वि. स. ११७९ के आसपासमें कोई भी भैसाशाह हुवा भी नही है इतिहासकी सोधखोलसे पत्ता भी लगाहै कि चोरडियोंमें चार भैसाशाह हुवा (१) वि. स. २०९ आभानगरी में भैसाशाह हुवा जिसकी एक दुकान मांडवगढमें भी थी भैसाशाहकी माताने शत्रुंजयका बड़ा भारी संघ निकाला इसके पास चित्रावेली थी ओशीयों मे स्नात्रमहोत्सव कर एक लक्ष अश्व एक लक्ष गौएं दानमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दी ७४॥ शाहामें इस भैसाशाहाका दूसरा नम्बर है इसका विस्तार पूर्वक लेख श्रीमान् चन्दनमलजी नागोरी छोटी सादडीवालाने वीर-शासनांक ७ ता. २०–११–२५ में दीया था (२) दूसरा भैसा-शाह वि. स. ५०८ के आसपास हुवा जिसका सिलालेख वर्तमान कोटा राजका अटारू ग्राम के जैनमन्दिरकी मूर्तिपर खुदा हुवा है यह लेख जोधपुरवासी इतिहास खोजी मुन्शी देवीप्रसादजीकी सोधखोल से मीला है इसी भैसाशाहका व्यापार रोडा विणजाराके साथ था केवल व्यापार ही नहीं किन्तु उन दोनों के आपसमें इतना प्रेम था कि भैसा और रोडा दोनोंका नामसे मेवाडमे भैसरोडा नाम का ग्राम वसाया था वह वर्तमानमें भी मोजुद है (३) तीसरा भैसाशाह वि. सं. ११०० के आसपास डिडवाना नगरमें हुवा जिसने डिंड-वानाका कीला तथा एक कुँवा बनाया था आज भी औरतें पाणि लाती है वह कहती है कि में भैसाशाहके कुवाँसे पाणी लाई वहां के राजाके साथ अणबनावसे भैसाशाहने डिडवाना छोड भिन्नमालमें वास कीया वहांपर वि. सं. ११०८ में आचार्य देवगुप्तसूरिका पाट महोत्सव कीया भैसाशाहाकी माता शत्रुंजयका संघ निकाला गूजरातमें भैसापर पाणीलाना छुडाया इसके समयमे गदइया जाति हुई विशेष खुलासा जैनजाति महोदय चोरडियोंकी ख्यातमे लिखा गया है (४) चोथा भैसाशाह नागोरमें हुवा टीकुशा बालाशा गीसुशा एवं तीन, भैसाके भाई थे चारोंभाईयोंने जगद्विख्यात ना-म्वरी करीथी इन लेखोंसे यतिजीका लेख निर्मूल होजाता है। आगे चोरडियों के बारामें ज्यादा लिखनेकी आवश्यक्ता नहीं है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारण सब जगह चोरड़िया कमलागच्छको ही अपना गुरु मानते है इस बारामें आगे अदालतोंसे इन्साफ भी होचुका है जिसकी एकाद नकल वहांपर देदेना अनुचित न होगा !

श्रीनाथजी श्रीजलंधरनाथजी

संघवीजी श्री फतेराजजी लिखावतो गढ जोधपुर जालौर मेडता नागोर सोजत जैतारण बीलाडा पाली गोडवाड सीवाना फलोदी डिड़वानो परबतसर विगैरह परगनोमें ओसवाल अठारा खांपरी दीसा तथा थांरे ठेठु गरु कमलागच्छारा भट्टारक सिद्धसू-रिजी है जिणोंकने इणारा चेला हुवे तीणोने गुरु करने मानजो ने जको नहीं मानसी तीके दरबारमे रु १०१) कपुरका देशी ने परगना में सिकादार हुसी तीको उपर करसी तीणोरा आगला परवाणा खास इणो कने हाजर है (१) महाराजश्री अजितसिंहजीरी सलामतीरो खास परवाणो स. १७५७ रा आशोज शुद्ध १५ को (२) महाराजश्री अभयसिंहजीरी सलामतीरो खास परवाणो सं. १७८१ रा जेठशुद ६ को (३) महाराजावडमहाराजश्री विजय-सिंहजीरी सलामतीरो खास परवाणो सं १८३५ आसाढ वद ३ को इण मुजब आगला परवाण श्रीहजुरमें मालुम हुवा तरेफिर श्रीहजुररा खास दसखतों को (४) परवाणो सं १८७७का वैशाख वद ७ रो हुवो तीण मुजब रहसी वीगत खाप अठारेरी तातेड,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बाफणा, वेदमुत्ता, चोरडिया, करणावट, संचेती, समदडिया, गदइया लुणावत कुमट भटेवरा छाजेड़ वरहट श्रीश्रीमाल लघु-श्रेष्टि मोरखपोकरणा रांका डिंडु इतरी खापांवाला सारा भट्टारक सिद्धसूरि और इणोरा चेला हुवे जिणोने गुरु कर मानजो अने गच्छरी लाग हुवे तीका इणोने दीजो. अबार इणोरेने लुकोंरा जतियोरे चोरडियोंरी खापरो असरचो पडियो जद अदालतमें न्याय हुवो ने जोधपुर नागोर मेडता पीपाडरा चोरडियोंरी खबर मंगाई तरे उणोने लिखीयो के मोरे ठेटु गुरू कमलागच्छरा है तीण माफीक दरबारसु निरधार कर परवाणो कर दीयो है सो इण मुजब रहसी श्री हजुररो हुकम छै सं. १८७८ पोस वद १४ (नकल हजुररा दफतरमें लीधी छै) इस परवाणासे भी यह ही सिद्ध होता है कि चोरडिया जाति कमलागच्छकी है जब चोरडिया कमलागच्छके है तब चोरडियोंसे निकले हुवे गुलेच्छा पारख सावसुखा बुचा भटनेरा आसाणी आदि ८५ जातियोंके गुरु भी कमलागच्छवाले ही है यतिजीने कीतनेक स्थानपर पारख गुलेच्छादि खरतरगच्छकी क्रिया करते देख उनको विश्वास दीलानेके लिये यह ढंचा खडा कीया ज्ञात होता है तात्पर्य फक्त रोटी पीछोवडीके लीये कीतना असत्य लेख लिख जगत्में अपनि कैसी हाँसी करवाइ है क्या जगद्विख्यात चोर-डिया जाति कमलागच्छोपासक है इसे कोइ अन्यथा कर सकेगा ? अपितु कभी नहीं इस जातिका वडवृक्ष देखो " जैन जाति महोदय " कीताबमें इत्यलम् ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(८) भन्साली चंडालीया भूरी भादांणी ।

वा० लि० लोद्रवा पट्टनमे यादववंसी धोराजी राजा था उसके पुत्र सागर युग राजा था सागरकी माताको ब्रह्म राक्षस लागा. वि. सं. ११९६ में दादा जिनदत्तसूरि आये राक्षसको निकाल राजाको जैन बना भन्साली जाति थापी पर राक्षसने दादाजीको मरणान्त कष्ट भी दीया था.

समालोचना—लोद्रवा पाट्टणमें पहला पँवारोका राज था जिसको देवराज भाटीने छीन लीया वि. स. ९०९ में देवराजने एक कीला बनाया अर्थात् देवराज भाटीसे लोद्रवामें भाटीयोंका राज कायम हुवा देवराज भाटीसे दादाजीके समय तक लोद्रवामें धीराजी नामका राजा हुवा या नहीं इस बारामें इतिहास क्या कहता है—

भाटी देवराज (९४९)
|
भाटी मुदाजी
|
भाटी वछुराव (१०३९)
|
भाटी दूसाजी (११००)
|
भाटी विजयराव
|
भाटी भोजदेव
|
भाटी जैसलराव (१२१२)

इस वंसावलिसे यह सिद्ध होता है कि यतिजीके लिखा समय लोद्रवा की गादी पर न तो धीराजी राजा हुवा न सागर युगराजा हुवा न भन्सालीयोंसे चंडालीया साखा निकली यतिजी स्वयं अपनि कीताबमे लिखा है कि रत्नप्रभसूरि १८ गौत्रोंके सिवाय सुघड चंडालीया गोत्र बनाया था, केई केई ग्रामोंमे भन्साली तपागच्छके भी है हमारे पास इतनी सामग्री इस बख्त नहीं है कि हम निर्णय कर सके पर एसे प्रमाणशून्य लेख पर भन्साली कैसे विश्वास कर सकेगा.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुताजी लीच्छामिप्रतापजीके पास भन्सालीयोंकी उत्पत्ति और अपना खुर्शी नामा है जिस्में लिखा है कि भण्डशोल ग्राममें वि. सं. १०११ में दादाजी जिनदत्तसूरिजीने रावल भादोजीको प्रतिबोध दे जैन बनाया ६ पीढीबाद धर्मसीजी भंडशोल छोडी इत्यादि अब यतिजीका लेख के साथ इसकों मीलान कीया जाय तो नतो नाम मीलता है न ग्राम मीलता है न समय मीलता है परं यह ख्यात भी भाटोंसे उतारी मालुम होती है कारण १०११ में दादासाहब का जन्म तक भी नहीं था. वास्ते विचारणीय है तथा जोधपुरराज तवारिखमे भंसाली होना १११२ में लिखा है मेरे ख्यालसे तो तीनो ख्यातों भाटों की बिलकुल गलत है भंसालीयोंको ठीक निर्णय करना जरूरी है।

(९) लुंकड ज्ञाति—

वा० लि० मेसरी खेता बहातीके लालो-भीमो दो पुत्र था वि. सं. १५८८ में अहमदाबादका बादशाह रुषतमखां के खजाना का काम करता हुवा क्रोडो रूपैयोंका माल ब्राह्मणोंको दे दीया फिर बादशाहाको खबर पडने पर लाला भीमा भागके गोडवाड एक तपागच्छके यतिके उपासरामें लुक गया पीछेसे फोज आई न मीलनेसे वापिस गई यतिने उनको जैन बनाके लुकड जाति थापी इत्यादि ।

समालोचना—इतिहास इस वातको मंजुर नहीं करता है कि वि. सं. १५८८ में अहमदाबादमें रुषतमखां नामका कोइ बादशाह हुवा हो देखिये अहमदाबाद के बादशाहा वि. सं.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सिकंदर वि.सं. १५८२
|
महमुदशाहा १५९२
|
बहादुरशाहा १५९३
|
सुल्तानमहम्मुद १५९४

१५८८ में रुषतमखां बादशाह हुवाही नहीं है क्या मेहसरीयों मे इतनी उदारता थी कि वह क्रोडो रुपैयोंका माल ब्राह्मणों को देदीया और बादशाहा कों खबर ही नहीं *यतिजी ! गप्पोंकी भी* कुच्छ हद हुवा करती है दर असल तपागच्छके महात्माओंका कहना है कि विक्रमकी बारह वी शताब्दी में चौहानराजपुतों को तपागच्छाचार्योंने प्रतिबोध दे लुंकड बनाया वास्ते लुंकडोंका गच्छ तपा है।

(१०) आर्यगौत्र लुणावतसाखा।

वा० लि० सिंधुदेशमें एक हजार ग्रामका राजा अभयसिंह भाटी को वि. सं. ११९८ में जिनदत्तसूरीने गोलीका फूल बनाया जलोपद्रव मिटाके जैन बनाया, राजाकी १७ वी पीढीमें लुणानामी हुवा जिससे लुणावत साखा हुई इत्यादि और यति श्रीपालजी वि० स० ११७५ में दादाजीसे आर्यगौत्र हुवा लिखा है.

समालोचना--अव्वलतो दोनों यतियोंका एक इतिहास होने पर भी २३ वर्षका अन्तर है दूसरा हजार ग्रामका मालक होनेपर भी राजाकी राजधानी या ग्रामका पत्ता नहीं है इतिहाससे वह सिद्ध नहीं होता है कि विक्रमकी बारहवी शताब्दीमें हजार ग्राम का मालक हिन्दुराजा सिंधमें स्वतंत्र राज करता था ! न जाने यतियोंने कोनसा गप्पपुरांणसे यह लेख लिखा होगा । इतिहास कहता है कि वि. सं. ७६८ में खीलाफा वलंद के समय महम्मुद कासमने सिंधपर चढाइ करी थी उस समय सिन्धमें आलौर राजधानी का दाहीर नामका राजा को मुशलमानोंने मार डाला और आलौर का

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कीला छीन लीया। बाद क्रमशः मुलतान देपाल सिखर कश्मीर सेम शिवस्थानादि सिन्धके वडे वडे नगरो पर मुसलमानाका राज होगया था. दाहीर राजाका मुख्य प्रधान आर्यगौत्री लाखण और वीरधवल था, जिस्मे लाखणतो संग्राममे मारागया और वीरधवल अपना कुटम्ब सहीत कन्नोज आगया था इससे यह सिद्ध होता है कि वि. सं. ७६८ के बाद सिंधमें १००० ग्राम का मालक हिन्दुराजा था ही नहीं और ७६८ में तो आर्यगौत्री मोजुद था तो फीर यतियों का लिखना ११९८ मे आर्य हुआ कोन विद्वान स्वीकार करेगा ? आगे दादाजी के समय सिंधके सार्वभौम्य राजाओंकी वंसावलि देखिये—

मुस्तजहरवल्लहाका राज वि.स. ११५१	दादाजी ने ११९८ में हजार ग्रामके राजा को प्रतिबोध दीया लिखा है पर सिंध के राजाओं में उसका नामनिशान तक भी नहीं मीलता है दर
मुस्तरसीद वल्लहाका " " ११७५	
रसीद वल्लहाका " " ११९१	
मुतकी वल्लहाका " " ११९२	
मुस्ता जिन्दका " " १२१७	

असल वि. सं. ६८४ में पंजाबमें विदेशीयों का भय से भागता हुवा भाटी गोसल रावको आचार्य देवगुप्तसूरीने प्रतिबोध दे आर्य गौत्र स्थापन कीया था " दादाजी के जन्म पहिले तो आर्य गौत्र में अनेक नामीपुरुष हो चुके थे जैसे आर्य लखमसी राजसी धनदत्त पासदत्त टोटासादि जिनोंके पुराणें कवित भी मील सक्ते है देखो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

"जैन जाति महोदय" आगे अभयसिंहकी सत्तरवी पीढी में लुणाचा हुआ लिखा वह भी मिथ्या है कारण ११९८ में अभयसिंह और १७ वी पीढी तक के ४२५ वर्ष गीनने से लुणा का समय १६२३ का होता है तब १४०४ में सारंग शा देसडला का संघ लुणाशा के वहां स्वामिवात्सल्य जीमते समय लुणाशाने ५००० सोनाके थाल जीमने को दीया एक वडी भारी नामी वावडी बन्धाई सारंगशा अपनी भतीजी लुणाशाहा को परणाई इत्यादि लुणावतों की वंसावलिमें विस्तारसे लिखा हुवा है लुकामत और कमलागच्छ के इस जाति के बारा में तकरार हुइ जब जोधपुर अदालत से इन्साफ हो लुणावत कमलागच्छ के श्रावक है एसा परवाणा अदालत से मीला था जीसकी साबुति के लिये देखो चोरडियों की खांप में एक अन्य परवाणा की नकल इत्यादि प्रमाणों से यतियों का लिखना असत्य है और लुणावत कमलागच्छ के श्रावक है।

(११) **बाफणा नाहाटा जांगडा बेतालादि ।**

वा० लि० धारानगरी के पृथ्वीधर पँवार की १६ वी पीढी में जवन और सच्चु दो नररत्न हुवे वह कीसी कारण से धारा छोड जालौर फते कर वहां सुखसे राज करने लगे आगे जो जालौर का राजा था वह कन्नोज के राठोडों की मदद ले जालौर पर धावाकीया खुब संग्राम हुवा पर कीसीका भी जय पराजय न हुवा + + जिनवल्लभसूरिने जवन सच्चुके खानगी आदमियोंको एक विजय यंत्र दीया जिसके जरियें जवन-सच्चु शत्रुओंको मर्दनकर भगा दीया तब जालौर और कन्नोजवाला माफी मांगी इतनाही नहीं बल्के जयचंद राठोड कन्नोज का राजा, जवन सच्चुको केइ ग्राम इनामका दे अपना सामन्त बना लिया + + वल्लभसूरिका स्वर्गवास हो गया तब जिनदत्तसूरिने उन दोनोंको प्रतिबोध दे जैन बना बाफाणा गौत्र स्थापन कीया पहेले जो रत्नप्रभसूरिने बाफणा बनाया था वह भी इनों के साथ मीलके खरतरा होगया + + सच्चुके २७

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुत्रोंसे सामन्तजीने वनराजके पुत्र अजयपालके पौत्र पृथ्वीराज चौहान के सेनापति बन काबुल के बादशाहाके साथ युद्ध कर ६ दफे बादशाहाको घाघरा ओरणी और चुडीयो पहनाके बजारमें घुमाया तबसे बाफणोंसे नाहटा जाति प्रगट हुई इत्यादि।

समालोचना—इस घटना का समय वि. स. ११६८–६९ का स्थिर हो सक्ता है। अव्वल जवन सच्चू की १६ पीढी पूर्व पँवारों की राजधानी धारामें नहीं किन्तु उज्जनमें थी। दूसरा पँवारों की वंसावलीमें पृथ्वीधर राजा हुआ भी नहीं है। तीसरा उस समय जयचंद राठोड का जन्म तक भी नहीं था ×× वरडियों की ख्यातमे यतिजी लिखते है कि धारा तुँवरोने छीन ली थी अगर यतिजीको यह पुच्छा जाय कि जवन सच्चु बाफणा होने पर जालौर का राज तथा जयचंद राठोड के दीया हुवा ग्राम कीस कों दीया? कारण आपका यह सिद्धान्त है कि जैन होने के बाद राज करना महा पाप है जैसे झाबको या बोथरो की ख्यात मे आपने लिखा भी है×× क्यों यतिजी उस समय जालोर क्या सूना पडा था या कोई गाडरियों राज करती थी कि दो राजपुतोंने जालौर का राज ले सुखसे राज करने लग गया×× जयचंद राठोड एसा डरपोक था कि अपनी फोज को पराजय करनेवाले को ग्राम इनाम का देदे। पाठकों! असत्य की भी हद हुवा करती है यतिजीकी इतनी वातों में एक भी सत्य नहीं है देखिये इतिहास क्या कहता है? जालौर के तोपखानामें एक सिलालेख खुदा हुवा है जिस्मे जालौर राजाओंकी वंसावली है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जालौर के पँवारराजा	धाराके पँवार राजा
पँवार राजा चंदन.	नरवर्मा (११६४)
,, ,, देवराज.	यशोवर्मा (११९२)
,, ,, अप्राजित.	जयवर्मा
,, ,, विजल.	लक्ष्मणवर्मा (१२००)
,, ,, धारावर्ष.	हरिश्चन्द्र (१२३६)
,, विशलदेव (११७४)	इनके बाद जालौरपर चौहानों
,, कुंतपाल (१२३६)	का राज रहा था.

धारा और जालौर दोनों राजाओं की वंसावलियोंमें जवन सच्चुका नाम तक भी नहीं है आगे रत्नप्रभसूरि प्रतिबोधित बाफणा खरतर हो गया लिखा है।

अव्वलतो पहिले बाफणा जाति थी तो दादाजी को बाफणा बनाने की जरूरत ही क्या थी? दूसरा एसा कोइ कारण भी नहीं था की जवन सच्चुकी जाति बाफणा रखे। खेर! हम पुच्छते है कि रत्नप्रभसूरि स्थापित बाफणा खरतर हो गया था तो क्या जालौरमें हुवा या सर्व मुल्कमें? अगर हो भी गये हो तो उपकेश गच्छमें क्या न्यूनता और खरतरो में क्या अधिकता थी? यतिजीने यह भी नहीं लिखा की रत्नप्रभसूरि स्थापित बाफणों कों जवन सच्चूकी माफीक कोई यंत्र मंत्र धनपुत्र विगैरह दिया? अगर यंत्र मंत्र धनपुत्र भी दीया तो एकाद बाफणा को दीया या सब मुलक के बाफणा को? मान लिया जाय कि सब बाफणा खरतर हो गया तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फिर खरतरो में क्या न्युनता हुई की वह बाफणा फिरसे कमलागच्छ को मानने लग गया और आज भी मान रहे है ? आगे पृथ्वीराज चौहान का पिता का नाम वनराज और पितामह का नाम अजयपाल लिखा है यह भी मिथ्या है। पृथ्वीराज के बाप के नाम सोमेश्वर ओर दादाका नाम अरणोराज था. आगे सावंत बाफणाने काबुलका बादशाह को छे वार घाघरा ओरणी चुडीयो पहनाई यह भी बिलकुल गलत है। नाहाटा जाति उस समय से होना भी गलत है कारण दादाजी का जन्म पहिले हजारो नाहाटा मोजुद थे. पृथ्वीराज के समय कीसी काबुलका बादशाहने दिल्लिपर हुमला नहीं कीया था पर गीजनीका शाहबुद्दिनगोरीने हुमला कीया था अगर सामंत बाफणाने बादशाह को घाघरा चुडीयों पहना के बजारमें घुमाया होता तो पृथ्वीराज रासामें उसका नाम अवश्य लिखा जाता पर कीसी इतिहासकारोंने या वीररसपोषक भाटोंने सामंत का नाम तक नहीं लिखा है दर असल यतियों का लिखना हि मिथ्या है.

बाफणा के बारे में जेसलमेर अदालतका इन्साफ वि. स. १८९१ में जेसलमेर के पटवो (बाफणों) ने संघ निकाला उस समय बीकानेरसे कमलागच्छीय श्रीपूज्य कक्कसूरिजीने अपने ११ यतियोंको बाफणोंकी वंसावलियों दे जेसलमेर भेजे। वहांपर वासचेपके समय खरतर श्रीपूज्यके और कमलागच्छयतियोंमे तकरार हुई खरतरा कहते है कि बाफणा हमारागच्छमें है वास्ते वासचेप हम देवेंगें तब कमलागच्छके यतियोंने कहा कि बाफणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हमारे गच्छके है वासक्षेप हम देवेंगें. तकरार यहांतक बड गई की जेसलमेरका राजा गजसिंहजी तक पहुंच गई राजाने दोनोंसे साबुति पुच्छी इसपर खरतरोंने तो जबानी जमाखरच जो यतियोंने मुक्तावलिमें लिखा वह कह सुनाया तब कमलागच्छयतियोंने बाफणोंकी सरूसे अर्थात् रत्नप्रभसूरिने अठारा गोत्रोंमे दूसरा गोत्र स्थापन कीया वहांसे सप्रमाण वंसावालियों राजाके आगे धरदी. इसपर न्याययुक्त इन्साफ दीया कि बाफणा कमलागच्छके श्रावक है वासक्षेप देना कमलागच्छवालोंका हक्क है जब कमलागच्छीय यतिजी बासक्षेप दीया संघमे साथे गये पटवोंने भी उन यतियोंका अच्छा सत्कार कीया इत्यादि रामलालजीने दो प्रकारके बाफणा लिख विचारे अज्ञ बाफणोंको धोखा दीया है बाफणा रत्नप्रभसूरिके प्रतिबोधित कमलागच्छके श्रावक है विशेष देखो " जैन जाति महोदय "

(१२) कटारिया कोटेचा रत्नपुरा ।

वा० लि० वि० स० १०२१ में सोनीगरा चौहान राजा रत्नसिंहने रत्नपुरा बसाया उसकी पांचवी पीढमे वि० स० ११८१ का भाखातीजने धनपाल राजा पाट बेठा. वह सिकार खेलनेको गया एक झाड निचे सुत्ता हुवाको सांप काटा. दादाजी झाडा दे विषोत्तार जैन बनाया उनके कुलमें झाझणसी हुवा वह दिल्लि बादशाहका मंत्री था एकदा शत्रुंजय गया वह आरति की बोलीमें मालवाकी आमंद ६२ लक्षकी दे दी वह वात बादशाहको खबर हुई तब झांझणसी अपने हाथसे कटारा खाया वास्ते कटारीया कहलाया ईत्यादि.

समालोचना–अव्वलतो १०२१ में चौहानोके साथ सोनीगरोंकी उपाधि ही नहींथी संचेतीयोंकी समालोचनामें हम सप्रमाण लिख

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आये की चौहान कीर्तिपाल समरसिंहने जालौर की सोनीगरी पाहाडी पर कील्ला बन्धानासे सोनीगरा कहलाया जिस्का समय वि. स. १२३६ के बादका है तो यतिजी १०२१ में सोनीगरा चौहान लिखते है यह महामिथ्या है आगे झांझणसी कौनसे बादशाहाके मंत्री थे वह भी नहीं लिखा मुसलमानोंकी तबारिखोंमे छोटी छोटी बातें भी लिखी हुई मीलती है तो ९२ लक्ष रूपयें एक आरती की बोलीमें लगा दीया जिसकी गन्ध भी नहीं ? आगे जैन एसे मूर्ख नहीं थे कि बादशाहाके देशकी आमंद तीर्थपर आरती की बोलीमें देदे और पुच्छने पर कटारी खा आपघात कर अनंत संसारी बनने को तय्यार हो जावे. यतिजी ! अगर ९२ लक्ष रूपैये झांझणसीने वीरतासे दे भी दीये हो तो वह डरपोक हो कटारी कबी नहीं खाता स्यात् एसा डरपोक हो तों यह होना असंभव है कि वह बादशाह कि आमन्दके ९२ लक्ष रूपैये आरतीकी बोलीमें चडा दे. झाझणसीने रूपैये रोकड तो नहीं दीया था तो फीर कटारी खानेकी क्या दहेसत थी अस्तु ! ९२ लक्ष रूपैये दीये या कटारीया देवद्रव्यके करजदार रहे यह भी तो निर्णय यतिजीने नहीं कीया। दर असल आंचलगच्छाचार्य जयसिंहसूरिने वि. स. १२४४ में कटारमल चौहानको प्रतिबोध दे जैन बनाया उसने महावीरका मन्दिर भी कराया बाद रत्नपुरामें बोहरगत करनेसे रत्नपुरा बोहरा कहलाया कोटेचा वगैरह इनोंसे निकली हुई जातियों है देखो "जैनगोत्रसंग्रह" कटारीयोंके भाट वँसावलिमें लिखा है कि दलपतसिंहजी में राजका कसूर होनेसे कटारी खाई दलपतजीरे चार

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुत्र था कुंवरपालजी जिनकी ओलाद कटारीया, कचरपालजी जिसके कोटेचा रत्नपालजी जिस्के रत्नपुरा सोभणजी जिस्के सोभद्रा इसका समय १०१२ का लिखा है इस कथापर यतिजीने युक्ति रची मालुम होती है पर यह विश्वास करने योग्य नहीं है ।

(१३) डागा मालु छोरीया पारख.

वा० लि० सोनीगरा चौहान राजा रत्नसिंहका सापविष दादाजी उत्तारीयाकी खबर दीवान मालदे राठी को हुई तब अपने पुत्रके अर्धांगकी बिमारी मीटानेका दादाजी को कहा दादाजीनें दीवानके लाडकेको आरोग्य बना कर जैन बनाया जिसकी डागा मालु जाति हुई ।

समालोचना—रत्नसिंहका समय तो यतिजी वि. स. १०२१ का लिखा है और दादाजीका समय ११८१ का लिखा है नजाने यतियोंने दादाजीकी आयुष्य कीतना वर्षकी मानी होगी दादाजीके समय सोनीगरा चौहान हीं नहीं था न जाने यतिजी नशाका तारमें यह गप्पों क्यों लिखमारी होगी. डागा मालुओंके साथ छोरियोंका कुच्छ संबन्ध भी नही है । छोरीया नागपुरीया तपागच्छके पारख उपकेशगच्छके । समजमे नहीं आताकी ५२ जातीके राठीयोंको जैन बनाके डागामालु जाति कीस हेतुसे स्थापि होगा यतिजी लिखती बखत इतना भी ख्याल नहीं कीया कि मालदेदी वानका समय १०२१ का और दादाजीका समय ११८१ का तो क्या डागामालु एसे अज्ञ ही है कि ऐसी कपोल कल्पित बातोंको मान लेगा डागामालु कीस गच्छके है यह निर्णय करना शेष रह जाता है.

(१४) रांका बांका काला गौरादि—

वा० लि० सोरठ वल्लभी के बाहार काकु पात्तक दो निर्धन तेल लुणकी दुकान

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मांडता था वहां नेमिचन्द्रसूरि आये, दोनोने अपना दुःख निवेदन कीया सूरिजीने धर्मकी शर्तपर भविष्य वतलाया कि राजाके जरिये तुम धनवान होंगे तुमारी वृद्धावस्थामें राजा तुमारा धन छीनलेगा तुम म्लेच्छोको लाके वल्लभीका भंग करावोगें. इत्यादि ' निदान ' एसा ही हुवा काकु पातककी पांचवी पीढीमें रांका वांका हुवा वह पाली में खेती करता था जिनवल्लभसूरिने भी भविष्य वतला खेती छोडा वैपार कराया ++ हींगलाज जानेवाला योगि रांकाके वहां रसायणकी तुंबी रख गया जिससे रांका धनाढ्य हुवा पल्लिवाल ब्राह्मणोंको नोकर रख व्यापार करनेसे पल्लिवाल धनाढ्य हो गया ×× एकदा सिद्धराज जयसिंहके ५६ लक्ष सोनैयाकी जरूरत पडी कीसीने नहीं दीया तब रांकावांकाने द्रव्य दीया जिनसे राजाने सेठपट्टी दीनी तबसे रांका शेठ कहलाते है इत्यादि ।

समालोचना---अव्वल तोइस जाति के बारामें यतिजी रामलालजी नेमिचन्द्रसूरिका समय वतलाते है तब श्रीपालजी जिनदत्तसूरिका नाम लिखते है । एक खानका इतिहासमें २०० वर्षका अन्तर है तो रांकावांका कीसके वचनों पर विश्वास रखे ? नेमिचन्द्रसूरिका समय ९५४ का और काकु पातककी पंचवी पीढी जिनवल्लभसूरिका समय ११६९ होनेसे विचमे चार पीढीमे २१५ वर्ष लिख मारना भी मिथ्या है नेमिचन्द्रसूरि और काकु पातकका समय ९५४ का माना जावे तों उस समय वल्लभीका भंग लिख मारना महा मिथ्या है यतिजीने काकु पातकका नाम सुनके ही यह ढंचा खडा कीया है अगर वल्लभीके भंगका समय और खरतराचार्योंका समय पर ध्यान देते तो यह धोखा कभी नहीं खाते. दर असल वीरात् ७० वर्षे ओशीयोंमे आचार्य रत्नप्रभसूरिने महाजनवंसके १८ गोत्रकी स्थापना करी जिस्में चोथा गौत्र ' बलाहा ' था उसकी वंसपरंपरा विक्रमकी आठवी शताब्दी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पालीमें काकु पातक सामान्यस्थितिवाले दो भाई वसते थे पालीका जेसल श्रेष्टिने शत्रुंजयका संघ निकाला काकु पातकभी उस संघके साथ यात्रा कर वापीस वल्लभीमें आये उस समय वल्लभीमें अन्तिम शीलादित्य राजाका राज था और नगरी वैपारसे उन्नत थी वास्ते केई स्वधर्मिभाइयोंकी सहायता पाके काकुपातक वहां वैपार करने लग गये सामान्य स्थिति होनेसे लोक काकुको रांक–रांक करने लग गये पर देण लेणका व्यवहार पातकका अच्छा होनेसे पातकको वांका–वांका कहने लग गये. वैपारसे रांका वांका वडे ही धनाढ्य हो गये काकुने अपनी पुत्रीके लिये एक बहुमूल्य कांगसी बनाई थी राजपुत्री उसे देख कांगसी मांगी काकु पुत्रीने कांगसी नहीं दी तब राजाने बलात्कारपूर्वक छीन ली। इसपर काकु पातक अर्थात् रांका वांका सिन्धकी तरफसे अरबी लोगोंको एक क्रोड सोनामोहोरो दे वल्लभीका भंग करवाया यह ही वात काठीयावाड और गुजरातका इतिहासमें लिखी है वल्लभीका भंग इ. स. ७६६ वि. स. ८२२ में हुवा था इसके आसपास ही 'बलाहा' गौत्र वालोंका नाम रांका वांका हुवा जब जिनवल्लभसूरिका समय ११६९ का जिनदत्तसूरिका समय ११६६ से १२११ का है यतिजीकी गप्पों और इतिहासके विच ४०० वर्षका अन्तर है रांकोंकी वंसावलिमें लिखा है कि वि० सं. ७९८ में रांकाने एक वल्लभीमें पार्श्वनाथका मन्दिर बनाया जिसपर सवा मण सोनाका ईंडा चडाया था बाद ८०० में शत्रुंजयका बडा भारी संघ निकाला इत्यादि देखो विस्तार "जैन जाति महोदय" आगे रांकोंको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सिद्धराज जयसिंह ५६ लक्ष सोनइया करज ले सेठकी पद्वि दी यह भी गलत है कारण रांका वांकाके समय उक्त राजाका जन्म तो क्या पर पाटणका भी जन्म नहीं हुवा था. सुरांणा संखलों की ख्यातमें तो यतिजी लिखते है कि सिद्धराज जयसिंह एक जगदेव पँवारको साल भरका क्रोड सोनइया देता था उसें ५६ लाख सोनाइया गुजरातमें कोइ देनेवाला नहीं मीला की पालीमें सेठ पद्वि दे करजा लेना पडा. देखो रांकोकी वंसावली वल्लभीका भंग हुवा तब रांका वांका पाटणका राजा वनराज चावड़ाका बहुत आग्रहसे तथा जैनाचार्योंके उपदेशसे पाटणमें आया और वनराज चावडा उसे सेठ पद्वि दीनी. खरतर यतियोंकी जबरदस्ती देखिये जोधपुरके दफतरीयों (बाफणों) ने संघ निकाला तब कमला-गच्छीय आचार्यको आमन्त्रण कीया उनोंके न आने पर खरतर श्रीपूजको साथ लिये रहस्तामें उनकी क्रिया करने लगे। बस खरतरोंने अपनि छाप मार दी की दफतरी खरतर गच्छके है एसे ही वनाव कोरंटगच्छीय संखलेचोंने मन्दिरकी प्रतिष्ठा समय बनाथा. रांका वांका रत्नप्रभसूरि प्रतिबोधित कमलागच्छोपासक श्रावक है इनोंकी वंसाव-लियों सरुसे आजतक कमलगच्छीय महात्माही लिखते है

(१५) राखेचा पुंगलीया जाति।

वा० लि० जैसलमेरका भाटी राजा जैतसीका पुत्र कल्हणको कुष्ट रोग हुवा वि० स० ११८७ मे जिनदत्तसूरिने रोग मीटाके जैन बना राखेचा जाति स्थापन करी। श्रीपालजी कुच्छ और ही लिखते है.

समालोचना—खुद जैसलमेरही वि. स. १२१२ में बसा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है तो ११८७ मे जैसलमेरका राजा जैतसी कैसे सिद्ध होता है ? भन्सालीयोंकी समालोचनामें हम भाटीराजाओं कि वंसावलि दी है जिस्में कोइ जैतसी नामका राजा भी नहीं हुवा यतिजी गप्पोंकी भी कुच्छ हद हवा करती है यतिजी खुद अपनी कीताबमें लिखा है कि वि० स० १२१२ में जैसलमेर वसा है इस ख्यातमें लिखते है कि ११८७ मे जैसलमेरका जैतसी राजा था दरअसल राजा तनुभाटी जिसने तनोट वसाया जिसके ५ पुत्रोंसे राखेचा नामका पुत्रकों वि० स० ८७८ में उपकेशाचार्य देवगुप्तसूरिने प्रतिबोध दे जैन बनाया इसकी ख्यात और वंसावलि विस्तारसे देखो "जैन जातिमहोदय" कीताबसे

(१६) लुणियाजाति ।

वा० लि० मुलतान नगरके राजाका दीवान हाथीशाके पुत्रको साप काटा बाद जिनदत्तसूरि आये. उस दम्पतिको एक शय्यामें सुलाके उसी पडदामें दादाजी बेठे सांपको बुलाया सांपके मुंहसे वेदधर्मकी निंदा करवा कर विषोत्तार जैन बना लुणीया जाति थापी.

समालोचना—अव्वलतो यतिजीने मुलतानके राजाका नामही लिखा दूसरा दम्पति एक शय्यामे सुता हो उस पडदामे दादाजीका बैठना भी असंभव है सांप मनुष्यकी भाषासे वेदधर्म कि निंदा करे यह भी एक आश्चर्यकी ही वात है कहां कहां पर लुणिया लुंकागच्छके भी है दर असल लुणीयोंका कोनसा गच्छ है इसका निर्णय इस समय मैं नहीं कर सक्ता कारण मेरे पास इतनी सामग्री नहीं है लुणीयोंको चाहिये कि वह अपनी जातिका निर्णय करे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अगर मेरी सोधखोलमे पत्ता मीलेगा तो दूसरा अंकमें प्रकाशित करवा दीया जायगा। परं यतिर्योका लेख विश्वास करने योग्य नहीं है

(१७) डोसी सोनीगरा।

विक्रमपुरका सोनीगरा हरिसेनके पुत्र नहीं. जब क्षेत्रपालको एक लक्ष सोनइयों की वोलवा करी × पुत्र हुवा परघरमें इतना धन नहीं. वास्ते बोलवा न चडानेसे क्षेत्रपाल अनेक कष्ट देने लगा. वि० स० ११२७ दादाजीने दुःख मीटाके जैन बनाया.

समालोचना—अव्वलतो ११९७ में सोनीगरा था ही नहीं सोनीगरा १२३६ के बाद हुवा है दूसरा घरमें ही लाक्ष सोनइया नहीं था तब बोलवा करना कैसे सिद्ध होता है? दादाजीको तकलीफ देनाकी निष्पत् लाख सोनईयोंकी बोलवासे प्राप्त हुवा पुत्र ही क्षेत्रपाल को सुप्रत कर देता तो क्षेत्रपालका अधिक जोर ही क्या था. दर असल डोसी गोत्र अंचलगच्छाचार्यके प्रतिबोधित है। देखो "जैनगोत्र संग्रह" डोसीयोका आंचलगच्छ है।

(१८) सुरांणा सांखळा सांढ सियाल साहेचा।

वि. स. ११७५ में पाटणका सिद्धराज जयसिंहका पलंग के पहारादार जगदेव पँवार था. जिसकी नोकरी एक वर्षका एक क्रोड सोनईया था. इस ख्यातमे यतिजीने जगदेव पँवारकी कथा कीसी भाटोंसे सुनी थी वह घसीट मारी है ++ जगदेवपँवारको दादाजी प्रतिबोध दे जैन सुरांणादि बनाया।

समालोचना—इतिहास इस वातको मंजुर नहीं करता है कि सिद्धराज जयसिंह एक वर्षका एक क्रोड सोनइया जगदेवको देता था. रांकोकी ख्यातमें तो यतिजी लिखा है की राजाको ५६ लक्ष सोनइया कीसीने करज नहीं दीया तब पालीका रांकोको सेठ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पद्वि दे करज लीया यतिजीको इतना तो सोचना था की इस प्रकाशके जमानामें एसी अघटित गप्पोंको साच्चर कैसे मानेगें। दर असल पाटणका इतिहासमें लिखा है की जगदेव पँवार एक वीर था सिद्धराजके मृत्युके बाद पाटण छोड अपने मोशाल कल्याणकटकका राजा प्रमार्दिके वहां चला गया था. यह ही वात सीरोहीके इतिहासमें पं० गौरीशंकरजी ओझाने लिखी है वास्ते यतियोंका लिखना विलकुल निर्मूल है आगे सुरांणा सांखलोके साथ सांढ सीयाल सालेचोंका भाईया जोड दीया यह भी गलत है सुरांणा सांखला तो सुराणां गच्छका है सांढ सीयाल पूनमिया गच्छका और सालेचा उपकेश गच्छ प्रतिबोधित है आगे कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्यको मलधारी खरतर लिख मारा है एक पापी पेटके लिये यतियोंको कीतना प्रपंच झाल रचना पडा है अगर भगवान् महावीरका ही यतिजी खरतर गच्छ लिख देते तो महावीरके माननेवाले सब जैन खरतर गच्छके ही हो जाते। तब तो जतिजीके पात्रोंमे रोटीयों, पेटीयोंमें पीछोवाडीयों मानी भी मुश्किल हो जाती.

(१९) आघेरिया जाति.

इस ख्यांतमें जो आर्यगोत्रका आदि पुरुष राव गौसल भाटी था आयरिया के बदले आघेरिया जातिका आदि पुरूष भाटी गौसलको लिख यह ढंचाखडा कीया है.

अगर विक्रम की तरहवी शताब्दीमे दादाजी लोकोको कैदसे छुडा देते थे तो उस समय हजारो मन्दिर और लाखो ग्रन्थ म्लेच्छेने नष्ट कर दीया था तथा पवित्र आर्य भूमि म्लेच्छोके हुमलोंसे महान् दुःखी हो रही थी उस दुःखसे मुक्त कर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन क्यों नहीं बना लिया की आज जतियोंके पात्रोंमे रोटीया और पीच्छोवाडियोंका ढींग हो जाता । दर असल आघेरिया जाति कीस गच्छोपासक है वह निर्णय होने पर दूसरा अंकमें लिखा जावेगा ।

(२०) सुघड दुघड.

यतिजीने अपनी मुक्तावलिमें लिखा हैं कि रत्नप्रभसूरि ओशीयोमें १८ गौत्र स्थापन करनेके बाद चंडालीया सुघडादि गौत्र स्थापन कीया था. परं आपको परस्पर विरूद्धता की परवाही क्या है ? आपको तो कीसी भी युक्तियों द्वारा सब ओसवालोंको खरतर बनाके पीछोवडी रोटी लेणी हैं दर असल दुघड नागोरी तपागच्छ और सुघड उपकेश गच्छके श्रावक हैं उत्पति के लीये वंसावलि देखो " जैन जाति महोदय " कीताब.

(२१) गंग दुधेडियों.

इनके बारामें भी यतिजीने एक यंत्र रचा है परं बंब गंग गांग दुधेरीया जातियों कंदरस (मलधार) गच्छाचार्य प्रतिबोधित है उन जातियों की वंसावलीयों आज पर्यन्त मलधार-कंदरस गच्छवाले ही लिखते आये हैं ।

(२२) बोथरा वच्छावत मुकीम फोफलीया.

वं० लि० जालौर का राजा सावंतसिंह देवडा के दो राणीयां थी एक का पुत्र सागर दूसरी का वीरमदे. जालौर का राज वीरमदे कों आया तब सागर अपनि माता को साथ ले आबुपर अपना नाना पंवार राजा भीम के पास चला गया. राजा भीम के पुत्र न होनेसे आबु का राज सागरको देदीया तब सागर आबुके १४० ग्रामोंका राज करने लगा. उस समय चितोड का राणा रत्नसिंह पर मालवा का बादशाहा फोज ले आया. तब रांणा सागरको बुलाया. सागर चितोड जा बादशाहा के साथ संग्राम कर बादशाहा को भगा दीया और मालवा अपने आधिन करलीया । बाद गुजरातका बादशाहने सागर पर हुकम भेजा कि तुम हमारी आज्ञापालन करो नहीं तो तुमारा माल्वा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छीन लुंगा ? इसको सागर स्वीकार न करने पर बादशाहा सागरपर चढ आया सागर ने संग्रामकर गुजरात भी छीन ली. अर्थात आबु, मालवा, गुजरात, इन तीनों पर सागरका राज होगया--+ + बाद चितोड पर दिल्लिका बादशाहा गोरिशाहा चढ आया राणाने फिर सागरको बुलाया सागर आपसमें समझोता करवा कर बादशाहासे आप २२ लाख रूपैये दंडका ले मालवा गुजरात पीच्छा दे दीया. + + चितोडका राणो रत्नसिंह सागरको अपना मुख्य मंत्रि बनाया बाद सागर आबु आया सागर के तीनपुत्र (१) बोहित्थ (२) गंगदास (३) जयसिंह जिस्में सागर के पीच्छे आबु का राज बोहित्थ को दीया + × वि. स. ११९७ में जिनदत्तसूरि आबुपर पधारे राजा बोहित्थको उपदेश दीया. राजाने कहा कि में जैन बन जाउं तो राज व शस्त्रका त्यागकर व्यापार करना पडे इत्यादि फिर सूरिजीने समझाया कि हे राजन्! विचार कर देखो चक्रवर्त्ति के पास कोई समय पंचाश्रभी नहीं मीलता है राजपाट सब कारमा हे वास्ते तुम हमारा श्रावक बनो भविष्यमें तुमारा कल्याण होगा इत्यादि उपदेश के प्रभावसे बोहित्थ के आठ पुत्रोमेंसे एक श्रीकर्ण को तो राजाके लिये छोड दीया बाकी सात पुत्रों के साथ राजा जैन बन गया. उसकी जाति बोत्थरा स्थापन करी +++ सूरिजीने आशीर्वाद दीया कि तुम खरतरगच्छको मानोगा तब तक तुमारा उदय होता रहेगा.

समालोचना--बोत्थरों कि ख्यात लिखते समय न जाने यतिजी नशामे चक चुरथे या बाल बच्चोंको खेला रहे थे साधारण मनुष्य-भी लेख लिखते समय लेखकी सत्यता के लिये प्रमाण की तरफ अवश्य ध्यान देता है पर हमारे यतिजी बडी बडी उपाधियों का वजन सिर पर उठाते हुवे बालक जीतनाभी ख्याल नहीं रखा कि मेरा लेख कोइ विद्वान् पढेगा तो मेरी उपाधियोंकी कितनी किंमत करेगा। अस्तु. अव्वल तो सावंतसिंह और सागरका समय यतिजीने नही लिखा परं राणा बोहित्थ को दादाजीने वि. स. ११९७ में जैन बोत्थरा बनाया इसपरसे सांवत देवडाका समय ११४७ और सागर का समय ११७२ के आसपास स्थिर होसक्ता है। सबसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पहला तो हमे यह देखनाहै कि वि सं. ११४७ के आसपास जालौर पर सावंत देवडाका राज था या नही ? ईसका प्रमाण के लिये जालौर का तोपखानामें एकसिलालेख खुदा हुवा है वह वि० ११७४ राजा विशलदेव पंवार का समय का है जिस्में जालौर के राजाओं की वंसावलि है तथा आबु चित्तोडकी भी वंसावली यहां देदी जाती है

जालौरके पंवार राजा	आबुके पँवारोंका राज	चितोड के राणा
चंदण	धुंधक (१०७८)	वैरिसिंह (११४३
देवराज	पूर्णपाल (११०२)	विजयसिंह ११६४
अप्राजित	कान्हडदेव (११२३)	अरिसिंह
विजल	ध्रुवभट	चौडसिंह
धारावर्ष	रामदेव	विक्रमसिंह
विशलदेव (११७४)	विक्रम (१२०१)	रणसिंह
कुंतपाल (१२३६)	यशोधवल	खेतसिंह

इन वंसावलियों से यह सिद्ध होता है कि नतो उस समय जालौर कि गादीपर सावंत देवडा हुवा न आबुकी गादीपर भीमपँवार तथा सागर या बोहिथ्थ हुवा न चितोडकी गादीपर राणा रत्नसिंह हुवा। आगे मालवा, गुजरात, और दिल्लिपर ११७२ में बादशाहाओंका राज होना यतिजी लिखते हैं वह भी बिलकुल गलत है कारण दिल्लिपर १२४६ तक हिन्दु सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का राज था गुजरातमे १३५६ तक वाघेला राजा करण का राज, मालवामें १३५६ तक पँवार जयसिंह का राज था बादमें बादशाही हुइ थी तब सागर का समय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

११७२ का था कोनसा विद्वान इन यतियों की गप्पों पर विश्वास करेगा ? इन इतिहास प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि—

(१) न तो उससमय चौहानोंमे देवडाजाति का जन्म ही था
(२) न उससमय जालौर पर सावंतसिंह देवडा हुवा था
(३) न उससमय आबुपर भीम पँवार का राजही था
(४) न उससमय चितोडपर राणा रत्नसिंह हुवा था
(५) न उससमय मालवामें बादशाही थी
(६) न उससमय गुजरातमें बादशाही थी
(७) न उससमय दिल्लिपर बादशाह का राज था
(८) न उससमय सागर राणा आबुका राजा ही था
(९) न उससमय सागरने मालवा गुजरात बादशाहासे छीना था
(१०) न उससमय दिल्लिके बादशाहासे २२ लक्षरुपैये दंडके लिये थे
(११) न उससमय दादाजीने बोहित्थको प्रतिबोध दे जैन बनायाथा

यतिजी महारज ! सौ बातों में ९९ गप्पों होने पर एक भी सत्य बात हो तो आदमीको बोलने को स्थान मील जाता है पर १०० की सौ गप्पों हो उसको मुह उंचा करने को भी जगह नहीं मीलती है यतिजी इस इतिहास युगमे सब बोत्थरा निरक्षर नहीं है कि आप कि गप्पों कों सत्य मान ले; आगे दादाजीने बोहित्थको राज छोडाने का बडा भारी प्रयत्न कीया पर बोहित्थकी ममत्व राजसे नहीं उत्तरी तब जैनधर्मसे वंचित रख श्रीकर्णको राजा बनाया। क्या यतिजी ! जैन होने पर राज करनेमें इतना बडा पाप है या जैन राज

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करनेको अयोग्य है ? श्रावकों की ख्यांत में भी आपने श्राव-देका एक पुत्रको राजके लिये धर्मसे वंचीत रख दीया । दर असल दादाजी का यह विचार न होगा परं डरपोक यतियोंका ढंचा है देखिये राजा उपलदे चंदगुप्त संप्रति आमराजा भाणाराला विजय-राजा गोशलभाटीराजा और कुमारपालादि संख्याबन्धराजा जैनधर्म पालता हुवा राज करते थे और राजके जरिये जैनधर्मकी कीतनी उ-न्नति करी ? वह जगद्विख्यात है. अब हमें यह पत्ता निकालना चा-हिये कि यतिजीने यह ढंचा कीस आधारपर खडा कीया है इतिहास-द्वारा ज्ञात होता है की विक्रमकी १७ वी शताब्दीमें चितोडके राणा प्रतापके भाई जगमाल ओर सागर था वह दोनों कुलकलंक बादशाह अकबरसे जा मीले तब अकबरने हिन्दुओंको आपसमें लडानेको जग-मालको तो सीरोहीका आधा राज और सागरको चित्तोडका राज अभिषेक कर दीया उसी समय सीरोहीमें सावंतसि देवडा हुवा था यतिजी को यह तो पूर्ण विश्वास है कि कलदारके किचडमें खुंचे हुवे ओसवालों को कुच्छ भी लिख देंगे तो निर्णयकरने जीतना अ-वकाश बोत्थरो को है नहीं दूसरा इतिहासकी तरफ तनक भी रूची नहीं जबतक निर्णय न होगा तबतक बोत्थरा खरतरोंको ही गुरु मान. गेटी पीछोवडी हमको दीया करेगा। एक–दो पीढीमें क्रियाका कदाग्रह जील जावेगा तो फीर अज्ञानी लोक हटको कभी नहीं छोडेंगे । इस वास्ते सावंतसिंह देवडा और सागर शिशोदीयाको बाप बेठा बनाके ५०० वर्ष पहेले हुए दादाजीका नाम बोहित्थके साथ जोड दीया

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

परं बोत्थरा निजर उठाके उस ख्यांतको न देखे वहांतक यतिजीकी पोल चलेगा. यतिजीको इतनासेही संतोष नहीं हुवा ।

आगे बोत्थरोकी ख्यातमें लिखते है कि दादाजी बोहित्थसे कहा कि तुमारा आयुष्य कम रहा हैं उस समय चित्तोडका राणा रायमल पर दील्ली का बादशाह चढ आया था चितोड का राणाने बोहित्थकों बुलाया तब आबुका राज जो जैनी नहीं हुवा था उस श्री कर्णको दे चितोड गया संग्राम में बादशाहको पराजयकर आप भी मर गया वह हनुमत वीर होके दादाजीकी सेवामे आगया. + + श्री कर्णके चार पुत्र सीमधर वीरदास हरीदास और उद्धरण + + एकदा श्री कर्ण बादशाहका मच्छेन्द्रगढ छीन लीया + + बादशाहाका खजाना जाता हुवाकों लुट लीया + बादशाह फोज ले आया संग्राममें श्री कर्ण मारा गया तब राणी अपने चारों पुत्रोंको ले अपने पीहर खेडीपुर आगई देवीकी प्रेरणासे खरतराचार्य के पास जैनधर्म स्वीकार कीया चारों पुत्र व्यापार करने लगे धनाढ्य हुवा शत्रुंजयका संघ निकाला + सीमधरके पुत्र तेजपाल ने गुजरात ठेके (इजारे) लेली और जिनकुशलसूरिका पद महोत्सव कीया. तेजपाल का पुत्र बल्हा–बल्हाका पुत्र कडवाशा हुवा + चितोडपर मांडवगढका बादशाह चढ आया कडवाशा चितोड जाके आपसमें मेल करवा दीया तब राणा कडवाशाको मंत्रीपद दीया. + कडवाशा गुजरात गया पाटण पाछी सुप्रत करदी वि. १४३२ जिनेश्वर सूरिका पद महोत्सव कीया आगे कडवाशाके तीन पीढीका नाम याद नहीं चोथी पीढीमे जेसल हुवा इनके वछराज. वछराज मडोरके राव रडमलजीके मंत्री बन गया रडमलजीको चितोडका राणा कुंभाने दगासे मारा तब वछराज अपनी अकलसे जोधाजी को बचाके मंडोर ले आये आगे बीकानेरके बछावतो की पीढीयो जोड दी हैं इत्यादि—

समालोचना—कहांतो राणा रायमलका समय, कहां बोहित्थ और दादाजीका समय. कहां राव रडमलका समय, कहां राणा कुंभाका समय. क्या यतिजी सदैव नशामे ही रहते थे ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यतिजीके लेखानुसार

बोत्थरोंकी वंसावलीका समय और चितोडके [redacted]

सावंतसिंह देवडा वि. स. ११४७ ०.००००

|

राणो सागरदेवडो ,, ,, ११७२........राणो रत्नसिंह

|

राणो बोहित्थ बोथरो ,, ,, ११९७........राणो रायमल

|

जैन सीमधर बोत्थरो ०●०००

|

,, तेजपाल ,, गुजरातको ठेके—इजारे लीवी तथा कुशलसूरिका

| पद महोत्सव किया वि० स० १३७७

,, वल्हा ००० ०००

|

,, कडवाशा पाटण पाछी दीनी जिनेश्वरसूरिका पद महोत्सव

१४३२ में आगे तीन पीढीका नाम यतिजीको

१ २ ३ | याद नहीं

,, जेसल

|

,, वछराज— रावरडमल

अब बोत्थरोके समयके साथ चीतोड के राणों के समयका भी

मीलान कीजीये—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राणो लाखण १४३६	राणा रत्नसिंह और सागरके विच ४१६
राणो मोकल १४५४	वर्षका अन्तर है राणा रायमल
राणो कुंभो १४७५	और बोहित्थ के विच ३३३ वर्षका
राणो उदयसिंह १५२५	अन्तर है बोहित्थ और तेजपालके
राणो रायमल १५३०	विच दो पीढीमे १८० वर्ष खत्म कर
राणो सांगो १५६५	दीया तब कडवाशा और वछराजके
राणो रत्नसिंह १५८६	विच पांच पीढीमे ४५ वर्ष ही हुवा है

धन्यभाग्य है बोत्थरोंकाकि दो पीढी तक अर्थात् ५५ वर्ष तक गुजरात का राज बोत्थरोंके एक कौनामें पडा रहा पर कीतने रूपैयोमे ठेकली उस समय गुजरातका राजा कोन था और फीर कडवाशाको क्या जरूरत पडि की गुजरात इनायत कर दी ? उस समय गुजरातका राजा कोन था इतिहासकारोंकी कीतकी अज्ञानता है की इतनी वडी भारी बातको कीसी जगह स्थान न दीया. आश्चर्य तों इस बातका है कि कडवाशाकी छोटीसी दुकांनमे गुजरात कैसी समावेश हुई होगी ? यतिजी ! कडवाशाके समय गुजरातमें मुसलमानोका राज था, बादशाहाओके जोर जुल्मसे राजपुत्त लोकभी जीव वचाते फीरते थे तो वैपार करनेवाले बोत्थराकी क्या ताक्त थी की वह गुजरातका राज ठेके ले सके ! एसे असत्य लेख लिख यतिजी एक अपनी हाँसी ही नही किन्तु श्रीपूज्योंके पुरांणा दफतरोंकोभी कलंकित कीया है। आगे कुंभाराणाने रावरडमलको मारना भी गल्त लिखा है कारण राव रडमलकी बेटी हँसाबाईको चितोडके राणा लाखाको परणाई थी जिसके मोकल पुत्र हुवा. राणा लाखाका देहान्त हुवा तब मोकल बालक था तब राव

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रडमलजी जोधाजी चितोड गये उनकी नियत चितोडका राज छीन लेनेकी थी जिसका दंड रूपमें रडमलजी मारा गया और राव जोधाजी १२ वर्ष तक ईधर उधर भमते रहै मंडौर बारह वर्ष चितोड के हाथोमे रही रावरडमल के मरने के बाद तो राणा मोकलने राज कीया था उसके उत्तराधिकारी राणा कुंभा हुवा था. कहां तो राणा कुंभा कहां वछराज की अकल ! दर असल बोत्थरा कोरन्ट गच्छाचार्य नन्नसूरि प्रतिबोधित है बोत्थरो का कोरंटगच्छ है उत्पति और वंसावलि विस्तारपूर्वक देखो "जैन जाति महोदय" नाम की कीताब । यतिजी की असत्य लिखने कि साहसिकता को..... दीया विगर रहा नहीं जाता है कि जिसने अपने भव बिगडने की परवा न करते हुवे भी बोत्थरों को खरतरा बनानेमें ईतना प्रयत्न कीया है.

(२३) गेहलडा.

इस जातिके बारामें वं० लि० वि. स. १५१२में खीची गीरधर को दादाजीने वासचूर्ण दीया गीरधरने एक कुंभार के ईटां के कजावामें ५००० इंटोपर डाल दिया की वह सब ईटो सोनाकी हो गई ** धन खरचनेंमे गेहला होनेसे गेहलडे कहलाये हैं.

समा० अव्वलतो गीरधरका ग्रामका ही पत्ता नहीं था स्यात् इटांका कजावा जंगलमे ही होगा, गेहलडोने एकाद पर्वतपर चुर्ण डाल दीया होता तो सब दुनियों गेहलडा बन जाति या तो गीरधरमें इतनी उदारता न होगी या दादाजीने चुरण देनेमें संकोचता करी होगीं. दर असल गेहलडा सुराणांगच्छोपासक श्रावक है । तथा मलधार गच्छवाले भी वंसावलियों लिखते है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(२४) लोढा जाति—

इनके बारामें भी यतिजीने अपनी युक्तियोंका ठीक प्रयोग कीया हैं परं इसकी समालोचना करनेकी आवश्यक्ता नहीं है कारण नागोर जोधपुर अजमेरादिके लोढे नागपुरीय तपागच्छके हैं लोढोंकी वंसावलियों भी तपागच्छके महात्मा लिखते है कोई कोई ग्राम-डोंमें अज्ञात लोढा खरतरगच्छकी क्रिया भी करते हैं पर लोढों का गच्छ तपा हैं ।

(२५) बुरड—

आबुगढ के पँवार राजा बुरडको वि. स. ११७५ मे दादाजीने शिवजी का प्रत्यक्ष दर्शन कराया. शिवजीने राजा से कहा कि हे राजन् तुँ मेरे से मोक्ष चाहता है परं अबी तो मेरी भी मोक्ष नहीं हुई है अगर तुँ मोक्ष ही चाहता है तो दादाजी को गुरू कर ले इत्यादि** राजा बुरड को प्रतिबोध दे जैन बनाया.

समा० यतिजी ! क्या आपको विश्वास है कि इस सुधारे हुए जमानेमें दुनिया ईस गप्पों को मान लेगी ? शिवजी प्रत्यक्ष रूपमें हो राजा को कह दीया कि तुँ मोक्ष चाहता हो तो दादाजी को गुरु कर ले और आप शीवजीदादाजीको गुरु कीया ही नही आपका डेरा योनीमे या स्मशानमे ही रखा, दर असल आबु पर कोइ बुरड राजा ही नहीं हुवा "बोत्थरोंकी समा० में देखो आबुराजाओंकी वंसावलि" न बुरड पँवारो से बना है बुरड पडिहार राजपुत्तों से बना है तपा-गच्छके आचार्योंने प्रतिबोध दे जैन बनाया है छगनमलजी बुरड के पास बुरडो का खुर्शी नामा तय्यार है बुरडो का गच्छ तपा है ।

(२६) नाहार—

इन जातिके बारामें वा० लि० मुदीयाड ग्राममें मेसरी देपाल का पुत्र को कोइ ले गया वहांपर मानदेवसूरि एक शिष्य सुडाजी के साथ आया देपालसूरिजीके पास जाके अर्ज की जैन धर्म की शर्तपर सुडाजी एक देवी सिंहणी का रूपमें थी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उसके पाससे पुत्र दीराया जैन बना उसकी नाहर जाति स्थापन करी इत्यादि गच्छ खरतर।

समा० यह ख्यात यतिजी भाटों से लिखी मालुम होती है भाट सुडाजीका नाम लेते है तब यतिजी मानदेवसूरिका नामाधिक लिखा है पर मानदेबसूरि खरतर पट्टावलिमें नहीं है अगर है तो कोनसा समयमें हुवा वह नहीं लिखा, साधुओमें सुडाजी नाम होना भी असंभव है दर असल वि. स. १०२९ में आचार्य सर्वदेवसूरि मुगी पाटन आये वहां का राठोड केहर का नूतन पुत्रको एक नाहारडी पूर्व जन्म का स्नेह से ले गई थी केहरने सूरिजी से अर्ज करनेपर नाहारडी को उपदेश दे पुत्र दीराया केहरको जैन बना नाहार गोत्र स्थापन कीया इस ख्यातका विस्तार वहुत है नाहारों का गच्छ तपा है। इनकी वंसावलियों नागोरी तपागच्छके महात्मा लिखते है।

(२७) छाजेड—

इन के बारामे वा० लि० धांधल साखा के राठोड रामदेवका पुत्र काजलकों वि. स. १२१५ में जिनचन्द्रसूरिने शिवाणामे वास चूर्ण दीया उसने अपने मकान का छाजोपर देवी के मन्दिर के छाजोपर और जिनमन्दिर के छाजोपर वह चुर्ण डाला की सब छाजा सोना का हो गया वास्ते छाजड कहलाया.

समा० अव्वलतो वि. स. १२१५में राठोडोमें धांधल साखा ही नहीं थी कारण विक्रमकी चौदहवी शताब्दीमें राव आसस्थानजी के पुत्र धांधलसे राठोडोमें धांधल साखा हुई थी यतिजी को सत्यासत्यकी परवा ही क्या ? उनको तो कीसी न कीसी युक्तिद्वारा सब ओसवालों को खरतरा बना पैसा पीच्छोडी व रोटी लेनी है काजलकी कीतनी भूल हुई अगर सम्पूर्ण मन्दिरपर वह चूर्ण डाल देता तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कलिकालका भरतेश्वर न बन जाता ? पर इतनी उदारता कहां थी ? दर असल ब्राजेड कमलागच्छ के श्रावक हैं आगे केइवार अदालतोमे इन्साफ हो परवाणा भी हो चुका है। एक नकल देखो चोराडियोंकी समालोचनामें, विशेष विस्तार ' जैन जाति महोदय ' ब्राजेडोंकि वंसावलि और सुकृतकार्य की सूची भी दी गई है ।

(२८) सिंघी—

इन के बारामे वा० लिखमारा हैं कि सीरोही के राजमें ननवाणा ब्रह्मण (वोहरा) सोनपालका पुत्र को साप काटा था, वि. सं ११६४ में जिनवल्लभसूरि विषोतार जैन बनाया बाद संघ निकाल्ने से संघि कहलाये मूलगच्छ खरतर बाद सत्तरेसोमे तपा हुवा ।

समा० अव्वल तो ग्राम का नाम नहीं लिखा दूसरा सांप कटा के जैन बनाना तो यतियों के लिये एक बालकों का खेलसा हो गया, संघ निकालने से संघवी तो बहुतसी जातियोंमें हुवे थे पर यह संघि एक हि जातिके है दर असल चंदरावती के पास ढेलडीया गांवके पंवारोको लोग ढेलडीया पँवार कहा करते थे वि० स० १०२३ मे सर्वदेवसूरिने पँवार संघराव को प्रतिबोध दे जैन बना उसके संघि जाति स्थापन करी संघरावका पुत्र विजयरावने एक क्रोड रूपैया खरचके चन्द्रावती में एक मंदिर कराया था संघरावकी सात पीढी तक तो राज कीया था बाद मुसलमानों की लुटफाटसे मुत्शदीपेसा व व्यापार करने लगा वास्ते संघियो का सरूसे तपागच्छ है देखो विस्तार ' जैनजाति महोदय ' से

(२९) भंडारी—

इस जातिके बारामें वा० लि० नाडोल के लाखणरावके महेसरादि छ पुत्रों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को वि० सं० १४७८ मे भद्रसुरिने जैन बनाया मूल गच्छ खरतर बाद अन्य गच्छ को मानने लग गये--

समा० सांभरका रावलाखण वि. सं. १०२४ मे नाडोल के भीलमैणोको पराजय कर अपनी राजधानी नाडोलमे स्थापन की. वि. सं १३६६ तक नाडेलमे चौहानोका राज रहा बाद अलाउदीन खील-जीने नाडोल छीन चौहानोंका राजकी समाप्ति करदी अबयह सोचना चाहिये कि १४७८ में नाडोल पर चौहानोंका राज भी नहीं था राव लाखणका समय १०२४ का था तो भद्रसूरि कीसको प्रतिबोध दीया ? क्या भंडारी एसे अज्ञात हैं कि यतियोंकी गप्पोंके सत्य मान लेगा ? दर असल राव लाखण के समय भद्रसूरि तो क्या पर खरतर गच्छका भी जन्म नही था. सत्यवात यह है कि नाडोलका चौहान राव लाखण के चार पुत्रों से दुद्धाजी नामका पुत्रको वि.स. १०३६ में यशोभद्राचार्य प्रतिबोध दे जैन बनाया आशापुरी माताको भंडार का काम करने से भंडारी कहलाये। दुद्धाजी की २१ वी पीढी में दीपचंदजी हुवे वह अपने मोशाल संचेतीयों के वहां रहते थे वास्ते संचेतीयोंकी कुलदेवी सचायाका और नानाजीं के गुरु कमलागच्छ-वालोंको मानने लगे। शेष भंडारी तपागच्छके है। दुद्धाजी से आज तक भंडारियों का खुर्शीनामा जैतारणवाले श्रीयुक्त अभयराजजी भंडारी के पास मोजुद है।

(३०) डागागोत्र—

डागों के बारामे वा० लि० नाडोल के चौहान डुगजीपर दिल्लि के बादशाहाने फोज भेजी उस समय जिनकुशलसूरिने सुत्ता हुवा बादशाहा का पलंग मंगवाय के बादशाहा से माफी मंगवाइ. उस डुगजी को जैन बना डागा जाति स्थापन करी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समा० डागा कीस गच्छके है ? इसका निर्णय के लिये इस समय मेरे पास इतनी सामग्री नहीं है पर यतिजी का ढांचा तो बिलकुल विगर पैरों का है कारण वि. स. १३६६ नाडोल में मुसलमानों का राज हो चुका था तब कुशलसूरि का समय १३७७ का है जब उस समय नाडोलमें मुसलमानों का राज हो गया फिर एक डुगजीके लिये फोज भेजनेकी क्या आवश्यकता थी चारणलोक डुगजीके गीत गाया करते है पर डुगजी जैन हो गया की साबुती कहां भी नहीं मीलती हैं अगर दादाजी सुता हुवा बादशाहाका पलंग मंगवा लिया होता तो हजारो मन्दिर और लाखो ग्रन्थ मुसलमानोंने उस समय नष्ट कर दीया था उसे क्यों नहीं बचाया ? क्या डुगजीको जैन बनाने जीतना भी लाभ उसमें नहीं था ? विद्वान तो कहते है कि यतिजीने आचार्यों की तारीफ नहीं किन्तु एक कीस्मकी हांसी करवाई है

(३१) ढड्ढा श्रीपति और तिलेरा जाति—

वा० लि० वि. स. ११०१ गोडवाड नाणा वेहडामे (पाटण) का सोलंकी सिद्धराज जयसिंह का पुत्र गोविन्दको खरतराचार्य जिनेश्वरसूरि प्रतिबोध दे जैन बनाया इसपर वडा आडम्बर के साथ महेल रचा हुवा है अन्तमें बीकानेर जयपुर के ढड्ढो की वंसावलि जोड दी है संघ निकलनादि वडे वडे कार्य कीया लिख ढड्ढेको खुश कर दीया पर उस्में सत्यता कीतनी है इसपर पाठकवर्ग ध्यान दे ।

समा० यतिजी के ऐतिहासिक ग्रन्थ की कहां तक तारीफ की जाय ! ऐसे प्रमणों का ग्रन्थ स्यात् कीसी विद्वानों के देखनेमें आया होगा मुझे तो यह प्रथम ही अवसर मीला है। अव्वल तो ११०१ मे सिद्धराज जयसिंह का जन्म ही नहीं था, जब पुत्र होना तो सर्वथा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिथ्या है क्या यतिजीने स्वप्ना की तो वात नहीं लिख मारी है ? गुजरात का इतिहास कहता है कि वि. सं ११४६ मे सिद्धराज जयसिंह पाटण की गादीपर राजा हुवा पच्चास वर्ष राज्य कर ११९६ में स्वर्गवास हुआ । इस राजा के पुत्र न होने से राजाने अपनी मोजुदगीमें चाहड को दत्त लीया था पर राजा का देहान्त होने के बाद सामन्तो--मंत्रियोमें दो मत्त हो गया । एक पक्षवालों का कहना था कि राजगादी चाहड को दी जावे तब दूसरा पक्षवालों का आग्रह था कि त्रीभुवनपाल के तीन पुत्रों से कुमारपाल को राज दीया जावे आखिर सर्व सम्मति से राजतिलक कुमारपाल को कीया गया । अगर यतियों के लिखा माफीक राजा को पुत्र होता तो यह घटना क्यों बनती ? दर असल ढढ्ढों कहते है कि हमारा तपागच्छ है वंसावलियों नाणावलगच्छवाला लिखते है ढढ्ढोकों चाहिये कि वह अपना खुर्शी नामा तैय्यार करें ।

(३२) पीपाड—

इस जाति के बारेमे वा० लि० पीपाड नगर का गेहलोत राजा कर्मचन्द को वि. स १०७५ में वर्धमानसूरिने जैन बनाके पीपाडा जाति स्थापन करी.

समालोचना--पीपाड खुद ही विक्रम की बारहवी शताब्दीमे पीपाडोंने वसाया था. १०७२में पीपाड ही नहीं था तो कीस कर्मचंद को जैन बनाया दर असल पीपाडा जाति नागपुरीया तपागच्छोपासक है खराडी बलुदा के तपगच्छीपोसालवाला सरूसे वंसावलियो लिखते हैं । पीपाडोंमें हीराणादि चार गोत्र और भी मीलते हैं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(३३) गोडवत छजलांणी छलाणी—

इन जातियों के बारामे भी वारिधिजीने पूर्वोक्त युक्ति रच खरतर होना लिखा है पर यह भी जातियां नागपुरिया तपागच्छोपासक है इनकी सरूमे वंसावलियों मेरे पास मे भी है और तपागच्छ महात्मा खराडि बलुंदावाले लिखा करते है। इन जातियों का गच्छ तपा हैं।

(३४) कटोतीयो को सांप कटाया (३५) भुतेडीयोंमें वाममार्गियों की युक्ति रची पर ईसका निर्णय के लिये हमारे पास इस समय इतनी सामग्री नहीं है कारण इस्के इतिहास विषय कम है (३६) जाडिया नागपुरिया तपागच्छके श्रावक है ईसकी वंसावलि इस समय हमारे पास मोजुद है यतिजी की युक्ति बिलकुल गलत है।

(३७) कांकरीयों के वारामे वारधिजी लि० भीमसी को दादाजीने दो कांकरा दीया जिनसे संग्राममे चितोड को राणो पराजय हो भाग गयो इत्यादि।

समा० यह बिलकुल गल्त है अगर एसा होता तो दो कांकरा मुसलमानोंके हुमलों की बख्त हिंदूवों को मील जाता तो आर्य देश म्लेच्छोंका गुलाम क्यों बनता? दर असल कांकरीयोंका गच्छ कमला है। कांकरीया स्वतंत्र जाति नहीं पर श्री रत्नप्रभसूरि प्रतिबोधित चरडा गौत्रकी एक साखा हैं। खरतरगच्छ के जन्म पहिले हजारों कांकरीयोंने अनेक सुकृत कार्य कीया है देखो " जैन जाति महोदय "

(३८) श्रीश्रीमालजाति—

इनके बारामे तो यतिजी बेहोश हो के एक म्लेच्छ बादशाहा का मुह से हिन्दुधर्म और ब्राह्मणो की वडी भारी निंदा करवाई है सत्यतो यह है कि वीरात ७० वर्षे रत्नप्रभसूरि ओशियोमे १८ गोत्रोमे ८ वांगौत्र श्रीश्रीमाल स्थापन कीया था देखो जैनजाति महोदय।

(३९) पोकरणा—

इनके बारामें बा० लि० एक विध्वा ओरत पुष्करमें स्नान कर रही थी उसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गोहने पकड़ली तब हरसोर का राजा सक्तसिंह निकालने को तलावमें गया उसे भी गोह पकडलीया उस समय दादाजीका एक साधु आके उन दोनों को बचा जैन बना पोकरणाजाति स्थापी ।

समा० दादाजीका स्वर्गवास १२११ में हुवा था जिसके कुच्छ समय पहिले यह घटना हुइ होगीं वहां उस समय पुष्कर का तलाव ही नहीं था कारण मंडोरका प्रसिद्ध पडिहार नाहडरावने वि. सं. १२१२ में तलाव खोदाया था बाद केइ वर्षोसे गोहें पैदा हुई होगी जब दादाजीके समय तलाव ही नहीं था तो कोनसा अज्ञ पोकरणा इस गप्पों पर विश्वास करेगा ? दर असल रत्नप्रभसूरि स्थापित १८ गोत्रोंमे पांच वा मोरख गोत्रकी पोकरण एक साखा हैं दादाजीके १६०० वर्ष पहिले पोकरणा हुवा था पोकरणो का कमला गच्छ है ।

(४०) कोचर मुत्तोंके बारामें तो यतिजीने मानो एक गप्पो का खजानाही खोल दीया है कोचरोकों पहला उपकेश गच्छीया पीछे खरतर गच्छीया बाद तपागच्छी या लिखा है एक यह भी लिखा है कि वि. स. १०२४में कोचरो के पूर्वजोने पाल्हनपूरमे दुकान करी थी इतिहास कहता है कि विक्रमकी तेरहवी शताब्दी मे आबुका राजा यशोधवल पँवार का दूसरा पुत्र प्रल्हणने पालनपुर वसाया था तब १०२४ मे कोचरोने कैसे दुकान करी होगी दर असल वीरात् ७० वर्ष आचार्य रत्नप्रभसूरिने ओशीयो मे १८ गौत्र स्थापन कीया जिस्मे १६ वा डिडुगौत्र की एक साखा कोचर है तथा मुनि ललितविजयजीने आबु तीर्थके बारामे एक कीताब लिखि जिसमें कोचरोंकी उत्पति ओशीयोंमें रत्नप्रभसूरि द्वारा हुई लिखि है इसीसे भी कोचरोंका गच्छ कमला है.

(४१) मुनोतों के बारामे वा० लि० कीसनगढ के राव राजा रायमलजी के पुत्र मोहणजी और पोचुजीको वि. स. १५९५ मे जिनचन्द्रसुरि ने प्रतिबोध दे जैन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बनाया जिस्मे मोहणजीका मुनोत और पांचुजी का पांचावत बाद विद्यासागरका उपदेशसे मुनोत तपा होगया इत्यादि ।

समा० अव्वलतो १५९५ में कीसनगढ था हीं नहीं कारण जोधपुरका राजा उदयसिंह के १७ पुत्रो से कीसनसिंह नामका पुत्रने वि. स. १६६९ में कीसनगढ वसाया था तब १५९५ में कीसनगढ के मोहणजीको प्रतिबोधा लिख मारना गप्प नहीं तो क्या गप्पका बच्चा है ? दर असल जोधपुर के राठोडराजा रायपालजी के ११ पुत्रोंसे मोहणजी नामका पुत्र कों तपागच्छ आचार्य देवेन्द्रसूरि ने प्रतिबोध दे जैन मुनोत बनाया इसका समय विक्रम संवत तेरहसौ के आसपासका है देखो जोधपुरवाले मेहताजीका खुर्शीनामा जोधपुर अजमेर कीसनगढादिके मुनोत आज भी तपागच्छोपासक श्रावक है—

(४२) श्रीमाल पोरवाडोंके बारामे यतिजीने गप्प मन्दिर के शिखर पर मानो एक ईंडा चडा दीया है एसी रद्दी वातों के लिये कागद काला करना मानो अपनि अमूल्य टैमका बलिदान करना है दर असल यह वात इतिहास प्रसिद्ध हैं की पार्श्वनाथ प्रभुकी पांचवीं पाट पर आचार्य स्वयंप्रभसूरिने श्रीमाल नगरमे ९०००० घर जैन श्रीमालों (श्रीमालीयों) का और पद्मावती नगरीमे ४५००० घर जैन पोरवाडोका बनाया था बादमें आंचलगच्छ वालोंने श्रीमाल तथा हरिभद्रसूरिने पोरवाड जैन भी बनाया था वास्ते श्रीमाल पोरवाडोंका मूल गच्छ उपकेश (कमला) गच्छ ही है ।

(४३) वैद मुत्तोंके बारामें तो यतिजीने गप्प मन्दिर पर ध्वजादंड चढाके सर्वांगसुन्दराकार बना दीया है इस ख्यातमे पँवारोकी वंसावलि लिखी हैं जिसको पढके सामान्य अभ्यासबालोको भी हाँसी आये विगर नहीं रहेगा यतिजीका लिखा ऐतिहासिक ग्रन्थ पढनेसे सांफ२ मालुम होता है कि यतिजीको किंचित भी इतिहासका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ज्ञान नहीं था. भाट भोजकोंकी या इधरउधरकी वातों सुन उनके साथ खरतर दादाजीका नाम जोडके यह ढांचा तय्यार कीया है और वीकानेरमें श्रीपालजी और रामलालजी कमलागच्छके श्रीपूज्यजीकी पग चंपी करनेको रात्रीमे जाया करते थे कीतनीक वातों उनके मुंहसे सुनी फिर उनके आचार्योंका नाम और साल संवत वदलाके कीतनीक ख्याता लिखी है आखिर असत्यका पग कहां तक चले. आगे इसी ख्यातमे लिखा है कि वि० स० १२०१ में चितोडका राणा भीमसी श्रेष्टिगोत्रवालोंको वेदोकी पद्वि दी और आधा गौत्र खरतर हो गया यह भी महा मिथ्या है कारण न तो १२०१ मे चितोड पर भीमसी राणा हुवा है न उस समय वेदोंकी पद्वि मीली हैं न आधा गोत्र खरतरा हुवा. यह सब माया सहित मृषावाद है दर असल वीरात् ७० वर्षे आचार्य श्री रत्नप्रभसूरिने ओशीयों नगरीमें महाराजाधीराज पँवार वंसी उपलदेको प्रतिबोध दे अठारा गोत्रमें श्रेष्ट होनेसे राजाका गोत्र श्रेष्टिगोत्र स्थापन कीया वाद इस गोत्रसे ३० साखाओं निकली है जिस्मे मुख्य वैद मुत्ता है इस समालोचनाका कर्तानि भी वेद मुत्ता जातिमें जन्म लीया है.

अन्तमें हम हमारे पाठकोंको यह बतलाना चाहाते है कि यतिजीनें 'महाजन वंस मुक्तावलि'में संचेती चोरडीया बाफणा लुणावत रांका जैसी प्रसिद्ध कमलागच्छकी जातियोंको तथा सींधी लोढा मुनोत ढढ्ढादि प्रसिद्ध तपागच्छकी जातियोंको खरतर होना लिख मारा। क्या यतिजीको यही विश्वास था कि कभी कोइ निर्णय करनेवाला मीलेगा भी नहीं? खरतर गच्छकी कीसी प्राचीन पट्टावलि या ग्रन्थमें यह नहीं लिखा है की नेमिचन्द्रसूरि वर्धमानसूरि जिनेश्वरसूरि जिनवल्लभसूरिने कोइ नया जैन बनाया हो! दादाजी जिनदत्तसूरिके बारामें तो दन्तकथाएं प्रचलित है कि दादासाहिबने सवालक्ष जैन बनाया, पर इस्मे भी चोरडीया बाफणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आर्य बोत्थरादि जातियों दादाजी बनाइ लिखना तो बिलकुल मिथ्या है विद्वानोंका यह अनुमान है कि कितनेक अन्यगच्छीय श्रावक पांच कल्याणक माननेवालो कों छे कल्याणक मनाके खरतर यतियोंने अपना श्रावक माना है जैसे मूर्तिपूजा छोडाके ढुंढीया तेरापंन्थीयोने अपना श्रावक माना है दर असल त्यागी साधुओं को तो सब गच्छवाले गुरू मानके वस्त्र पात्र अशनादिसे सन्मान करते है उनोंके लीये तो गच्छकी खेंचाताण है भी नहीं अगर कोइ करते है तो व्यर्थ है गच्छकी खेंचाताण तो द्रव्य रखनेवाले गच्छकी गोचरी लानेवाले यतियोंने करी है जिनसे समाजको कीतना नुकशान उठाना पडा है ?

यह समालोचना मैंने खास यति रामलालजीकी बनाइ महाजन मुक्तावलि पर ही करी है अगर इसको पढके अन्य कीसीको राजी नाराजी पाना हो तो मेरा एक रतीभर भी दोष नहीं है दोष है यति रामलालजीका कि जिसने पहलेसे असत्य वार्ते लिख अन्य गच्छवालोंका अपमान कीया है अगर मेरे लिखने पर कोइ सज्जन प्रत्यालोचना करना चाहे तो मेरी नम्र निवेदन है कि वह सप्रमाण और सभ्य भाषामें लिखे की आजका जमानामे लेखककी विद्वान लोक कदर करे इत्यलम् ।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीरत्नप्रभाकरज्ञानपुष्पमाला पु. नं. ८२

अथ श्री

जैन जाति निर्णय द्वितीयाङ्क.

जैनजातिनिर्णय प्रथमाङ्क में यतिजी रामलालजीकी बनाई 'महाजनवंस मुक्तावलि' नामकी किताबमे लिखि जैन जातियों-पर समालोचना कर इतिहासद्वारा कुच्छ निर्णयकर पाठकोकी सेवामें रख दीया था अब इस द्वितीयाङ्कमें यह बताया जावेगा कि कौनसी जाति कीसगच्छके आचार्य प्रतिबोधित है और मूलजातिसे कीतनी कीतनी साखा प्रतिसाखा निकली है।

भगवान् पार्श्वनाथके संतानियोंकी परम्परा।

तेवीसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथके प्रथम पाट शुभदत्त गणधर, दूसरे पाट हरिदत्ताचार्य, तीसरे पाट आर्य समुद्राचार्य, चोथे पाट केशी श्रमणाचार्य एवं चार पाट तक तो निग्रन्थगच्छ कहलाता था. पांचवे पाट स्वयंप्रभसूरि हुवा. आप विद्याधर–अनेक विद्याओंके पारगामि होनेसे निग्रन्थ गच्छका नाम विद्याधर गच्छ हुवा. आपने श्रीमाल-नगर (हालका भीन्नमाल) में ९०००० घरोंको प्रतिबोध दे जैन श्रीमाल (श्रीमाली) तथा पद्मावती नगरीमें ४५००० घरोंको

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन पोरवाड बनाया था. छठ्ठे पाट रत्नप्रभसूरि उपकेशपट्टन (हालकि ओशीयों) में ३८४००० घरोंको जैन महाजन (ओसवाल) बनाया तबसे विद्याधर गच्छका नाम उपकेश गच्छ हुवा आपके शासनमें कनकप्रभसूरिसे कोरंट नगरमें कोरंट गच्छकी स्थापना हुइ जबसे पार्श्वनाथ संत नियोंकी दो साखाएं हो गई एक उपकेशगच्छ दूसरा कोरंटगच्छ, बाद उपकेशगच्छसे द्विवन्दनिकगच्छ ओसवालगच्छकी उत्पत्ति हुई तथा उपकेशगच्छको कमलाका विरूद भी मीला ।

निग्रन्थगच्छ विद्याधरगच्छ उपकेशगच्छ कोरंटगच्छ द्विवन्दनीकगच्छ ओसवालगच्छ और कमलागच्छ एवं पार्श्वनाथ संतानिया सातनामोंसे विख्यात हुवे ।

श्रीमाल पोरवाडोंकी साखा प्रतिसाखा उनके सुकृतकार्यो व वंसावलियों कोरंटगच्छवालोंके पास थी कोरंटगच्छवालोका एक बडा भारी ज्ञानभंडार कोरंट नगरमें था वहां के महाजनोंसे दरियाफ्त करनेसे ज्ञात हुवाकि कीतनाक तो मुसलमानोंका अत्याचारोंसे वह भंडार नष्ट हो गया शेष रहा हुवा गृहस्थलोगोंके हाथमें रहा उसका संरक्षण पुरण तौरसे न होनेसे कीतनाक नष्ट हो गया फिर भी रहा हुवा भंडार श्री राजेन्द्रसूरिके हाथ लगा. और वि. सं. १९१० में कोरंटगच्छीय श्रीपूज्य बीकानेर आये जब कीतनिक पुस्तकों लाये थे. वह कमलागच्छीय श्रीपूज्यजीको दीथी जिस्मे एक वहि वंसावलियोंकी थी वह वि. सं. १९७४ में यति-वर्य्य माणकसुन्दरजी द्वारा मुझे जोधपुर में मीली जिस्मे कोरंटगच्छा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार्यो प्रतिबोधित ओसवालोंकी वंसावलियों थी जिस्के नाम यहां पर दीया जाते है ।

आचार्य श्री रत्नप्रभसूरि वीर संवत् ७० विक्रम संवत् के ४०० वर्ष पहला ओशीयो नगरीमें ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्योंके ३८४००० घरोंको प्रतिबोध दे महाजन संघकी स्थापना करी जिनका अलग अलग १८ गौत्र स्थापन कीया फिर बादमें कीतनेक तो पूर्वजोंके नामसे, कीतनेक व्यापार करनेसे, कीतनेक ग्रामोंके नामसे कीतनेक धर्मकार्योमे नाम्बरी करनेसे एकेक मूल गौत्रसे अलग अलग अनेक जातियोके नामसे मशहूर हुई उनोकी वंसावलियोंसे हमे जीतना पत्ता मीला है वह यहां पर लिख देते है ।

(१) **मूलगौत्र तातेड़**—तातेड़, तोडियाणि, चौमोला, कौसीया, धावडा, चैनावत्, तलवाडा, नरवरा, संघवी, डुंगरीया, चोधरी, रावत, मालावत, सुरती, जोखेला, पांचावत, विनायका, साढेरावा, नागडा, पाका, हरसोत, केलाणी, एवं २२ जातियों तातेड़ोंसे निकली यह सब भाई है ।

(२) **मूलगौत्र बाफणा**—बाफणा, (बहुफूणा) नहटा, (नाहाटा नावटा) भोपाला, भूतिया, भाभू, नावसरा, मुंगडिया, डागरेचा, चमकीया, चोधरी, जांघडा, कोटेचा, बाला, धाधुरिया, तिहुयणा, कुरा, बेताला, सलगणा, बुचाणि, सावलिया, तोसटीया, गान्धी, कोटारी, खोखरा, पटवा, दफतरी, गोडावत, कूचेरीया,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बालीया, संघवी, सोनावत, सेलोत, भावड़ा, लघुनाहटा, पंचवया, हुडिया, टाटीया, ठगा, लघुचमकीया, बोहरा, मीठडीया, मारू, रणधीरा, ब्रह्मेचा, पाटलीया, वानुणा, ताकलीया, योद्धा, धारोला, दुद्धिया, बादोला, शुकनीया. एवं ५२ जातियों बाफणोंसे निकली हुइ आपसमें भाई है ।

(३) **मूलगौत्र करणावट**—करणावट, वागडिया, संघवी, रणसोत, आच्छा, दादलिया, हुना, काकेचा, थंभोरा, गुदेचा, जीतोत, लाभांणी, सखला, भीनमाला, एवं करणावटोंसे १४ साखाओं निकली वह सब आपसमें भाई है ।

(४) **मूल गौत्र बलाहा**—बलाहा, रांका, वांका, शेठ, शेठीया, छावत, चोधरि, लाला, बोहरा, भूतेडा, कोटारी, लघु रांका, देपारा, नेरा, सुखिया, पाटोत, पेपसरा, धारिया, जडिया, सालीपुरा, चितोडा, हाका, संघवी, कागडा, कुशलोत, फलोदीया एवं २६ साखाओ बलाहा गोत्रसे निकली वह सब भाई है ।

(५) **मूलगौत्र मोरख**—मोरख, पोकरणा, संघवी, तेजारा, लघुपोकरणा, वांदोलीया, चुंगा, लघुचुंगा, गजा, चोधरि, गोरीवाल, केदारा, वातोकडा, करचु, कोलोरा, शीगाला, कोटारी एवं १७ साखाओं मोरखगोत्रसे निकली वह सब लाई है ।

(६) **मूलगौत्र कुलहट**—कुलहट, सुरवा, सुसाणी, पुकारा, मसांणीया, खोडीया, संघवी, लघुसुरवा, बोरडा, चोधरी, सुरा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

णीया, साखेचा, कटारा, हाकडा, जालोरी, मन्नी, पालखीया, खूमाणा एवं १८ साखाओं कुलहट गौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(७) मूलगौत्र विरहट—विरहट, भुरंट, तुहाणा, ओसवाला, लघुभुरंट, गागा, नोपत्ता, संघवी, निबोलीया, हांसा, धारीया, राजसरा, मोतीया, चोधरी, पुनमिया, सरा, उजोत, एवं १७ साखाओं विरहट गौत्रसे निकली है वह सब भाई है।

(८) मूल गौत्र श्रीश्रीमाल—श्रीश्रीमाल, संघवी, लघुसंघवी, निलडिया, कोटडिया, झाबांणी नाहरलांणी, केसरिया, सोनी, खोपर, खजानची, दानेसरा, उद्धावत, अटकलीया, धाकडिया भीन्नमाजा, देवड, माडलीया, कोटी, चंडालेचा, साचोरा, करवा एवं २२ साखाओं श्रीश्रीमाल गौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(९) मूल गौत्र श्रेष्टि—श्रेष्टि, सिंहावत्, भाला, रावत, वैद, मुत्ता, पटवा, सेवडिया, चोधरी, थानावट, चीतोडा, जोधावत्, कोटारी, बोत्थाणी, संघवी, पोपावत, ठाकुरोत्, बाखेटा, विजोत्, देवराजोत्, गुंदीया, बालोटा, नागोरी, सेखाणी, लाखांणी, भुरा, गान्धी, मेडतिया, रणधीरा, पातावत्, शूरमा एवं ३० साखाओ श्रेष्टि गौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१०) मूल गौत्र संचेति—संचेति (सुचंति साचेती) ढेलाडिया, धमाणि, मोतिया, बिंबा, मालोत्, लालोत्, चोधरी, पालाणि लघुसंचेति, मंत्रि, हुकमिया, कजारा, हीपा, गान्धी, बेगा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

णिया, कोटारी, मालखा, छाछा, चितोडिया, इसराणि, सोनी, मरुवा, घरघटा, उदेचा, लघुचोधरी, चोसरीया, बापावत्, संघवी, मुरगीपाल, कीलोला, लालोत्, खरभेडारी, भोजावत्, काटी, जाटा, तेजाणि. सहजाणि सेणा मन्दिरवाला, मालतीया, भोपावत्, गुणीया, एवं ४४ साखाओ संचेति गोत्रसे निकली वह सब भाई है

(११) मूल गौत्र आदित्यनाग—अदित्यनाग, चोरडिया, सोढाणि, संघवी, उडक मसाणीया, मिणियार, कोटारी, पारख, 'पारखों' से भावसरा, संघवी, ढेलडिया, जसाणि, मोल्हाणि, नडक, तेजाणि, रूपावत्, चोधरि, 'गुलेच्छा'—गुलेच्छोंसे दोलताणी, सागाणि, संघवी, नापडा, काजाणि, हुला, सेहजावत्, नागडा, चित्तोडा, चोधरी, दातारा, मीनागरा, 'सावसुखा' सावसुखोंसे मीनारा, लोला, वीजाणि, केसरिया, वला, कोटारी, नांदेचा, 'भटनेराचोधरी'—भटनेराचोधरियोंसे कुंपावत्, भंडारी, जीमणिया, चंदावत्, सांभरिया, कानुंगा, 'गदईया' गदइयोंसे गेहलोत्, लुगावत्, रणशोभा, बालोत्, संघवी, नोपत्ता 'बुचा' बुचोंसे सोनारा, भंडलीया, करमोत्, दालीया, रत्नपुरा, फिर चोरडियोंसे नाबरिया, सराफ, कामाणि, दुद्धोणि, सीपांणि, आसाणि, सहलोत्, लघु सोढाणि, देदाणि, रामपुरिया, लघुपारख, नागोरी, पाटणीया, छाडोत्, ममइया, बोहरा, खजानची, सोनी, हाडेरा, दफतरी, चोधरी, तोलावत्, राव, जौहरी, गलाणि इत्यादि एवं ८५ साखाओं आदित्यनाग गौत्रसे निकली वह सब भाई है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(१२) मूलगौत्र भूरि—भूरि, भटेवरा, उडक, सिंधि, चोधरी, हिरण, मच्छा, बोकड़िया, बलोटा, बोसूदीया. पीतलीया, सिंहावत्, जालोत्, दोसाखा, लाडवा, हलदीया, नाचाणि, मुरदा, कोटारी, पाटोतीया एवं २० साखाओं भूरि गौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१३) मूलगौत्र भद्र—भद्र, समदडिया, हिंगड, जोगड, लिंगा, खपाटीया, चवहेरा, बालडा, नामाणि भमराणि, देलडिया, संघी, सादावत्, भांडावत्, चतुर, कोटारी, लघु समदडिया, लघु हिंगड, सांढा, चोधरी, भाटी, सुरपुरीया, पाटणिया, नांनेचा, गोगड, कुलधरा, रामाणि, नथावत्, फूलगरा एवं २९ साखाओं भद्रगौत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१४) मूलगौत्र चिंचट—चिंचट, देसरडा, संघवी, ठाकुरा, गोसलांणि खीमसरा, लघुचिंचट, पाचोरा, पुर्विया, निसांणिया, नौपोला, कोठारी, तारावाल, लाडलखा, शाहा, आकतरा, पोसालिया, पूजारा, वनावत्, एवं १९ साखाओं चिंचटगोत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१५) मूत्रगौत्र कुमट-कुमट काजलीया. धनंतरि. सुंघा जगावत् संधवी पुगलिया कठोरीया कापुरीत संभरिया चोक्खा सोनीगरा लाहोरा लाखाणी मरवाणि मोरचीया. छालीया मालोत् लघुकुंमट नागोरी एवं १९ साखाओं कुंमटगोत्रसे नीकली यह सब भाई है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(१६) **मूलगोत्र डिडू**–डिडू राजोत् सोसलाणि धापा धीरोत् खंडिया योद्धा भाटिया भंडारी समदरिया सिंघुडा लालन कोचर दाखा भीमावत् पालणिया सिखरिया. वांका वडवडा बादलीया कानुंगा. एवं २१ साखाओं. डिडूगोत्रसे निकली वह सब भाई है।

(१७) **मूलगोत्र कन्नोजिया**–कन्नोजिया वडभटा राकावाल तोलीया धाधलिया, घेवरीया, गुंगलेचा, करवा, गढवाणि, करेलीया, राडा, मीठा, भोपावत्, जालोरा, जमघोटा, पटवा, मुशलीया एवं १७ साखाओ कन्नोजिया गोत्रसे निकली यह सब भाई है।

(१८) **मूलगोत्र लघुश्रेष्टि**–लघुश्रेष्टि, वर्धमान, भोभलीया लुणेचा, बोहरा, पटवा, सिंधी, चिंत्तोडा खजानची, पुनोत्–गोधरा, हाडा, कुबडिया, लुणा, नालेरीया, गोरेचा, एवं १६ साखाओ लघुश्रेष्टिगोत्रसे निकली वह सब भाई है।

२२–५२–१४–२६–१७–१८–१७–२२–३०–४४–८९–२०–२९–१९–१९–२१–१७–१६ कुल संख्या ४९८ मूल अठारा गोत्रकी ४९८ साखाओ हुई इसपर पाठकवर्ग विचार करसक्ते है कि एक समय ओसवालोंका कैसा उदय था और कैसे वड़वृक्षकी माफीक वंसवृद्धि हुई थी इति ओशीयों नगरीमे बनाये हुवे १८ गौत्र ससाखाओं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रत्नप्रभसूरि ओशीयोंके सिवाय अन्य स्थानोंमें बनाये हुए ओसवाल.

(१) मूलगौत्र चरड—चरड़, कांकरीया, सानी, कीस्तुरीया, बोहरा, अछुपत्ता, पारणिया, संघवी वरसांणि.

(२) मूलगौत्र सुघड—सुघड, संडासिया, करणा, तुला, लेरखा.

(३) मूलगौत्र लुंग—लुंग, चंडालिया, भाखरीया बोहरादि.

(४) मूलगौत्र गटिया—गटिया, टींबाणी, काजलीया रांणोत्।

आचार्य रत्नप्रभसूरिके बाद उनके परम्परामें आचार्योंने औरभी क्षत्रीयोंको जैन बनाया था जैसे--

(१) मूलगौत्र आर्य—लुणावत संघवी सिन्धुडा।

(२) मूलगौत्र काग— ....

(३) मूलगौत्र गरुड—धाडावत चापड।

(४) मूलगौत्र सालेचा—बोहरा, जोधावत्, बनावत्, गान्धी कोटारी पाटणीया चोधरी।

(५) मूलगोत्र वागरेचा—सोनी संधि जालोरा।

(६) मूलगौत्र—कुंकमचोपडा, धूपिया, कुंकडा, गणधर चोपडा, जाबलीया, वटवटा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(७) मूलगौत्र—सफला-बोहरा, सांढिया, जालोरा, कोटारी, भलभला ।

(८) मूलगौत्र नक्षत्र—घीया संघवी खजानची ।

(९) मूलगौत्र आभड—कांकरेचा कुबेरिया पटवा, चोधरी, कोठारी, सांभरिया संधि मेहता ।

(१०) मूलगौत्र—छावत, कोणेजा, गटीयाला लेहेरीया चौहाना ।

(११) मूलगौत्र तुंड—वागमार फलोदीया हरसोरा ताला, साचा संधि ।

(१२) मूलगौत्र पछोलीया—पीपला, बोहरा, रूपावत नागोरी ।

(१३) मूलगौत्र हथुडिया—छपनीया रातडीया, गौड, राणावत् ।

(१४) मूलगौत्र मंडोवरा—रत्नपुरा, बोहरा, कोटारी ।

(१५) मूलगौत्र मल—मला, वीतरागा, कीडेचा, सोनी ।

(१६) मूलगौत्र—गुदेचा, गगोलीया वागाणी ।

(१७) मूलगौत्र छाजेड—संघवी नखा चावा ।

(१८) मूलगौत्र राखेचा—पुंगलीया पावेचा धामाणि ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संख्या.	राजपूतोंसे मूल गौत्र.	साखाओं.	आचार्य.	समय.	नगर.	कुल देवी.
१	तातेड. गौत्र.	तोडियाणिआदि २२	पार्श्वनाथ भगवानके छट्टेपाट रत्नप्रभसूरि.	वीर निर्वाणके बाद ७० वर्ष विक्रम संवत से ४०० वर्ष पहेला जिसको आज २३८३ वर्ष हुवा है।	नगर उपकेश पट्टन (वर्तमानमें उसे ओसीयों कहते है)	कुलदेवी सचायिका.
२	बाफणा ,,	नाहाटादि ५२				
३	कर्णावट ,,	आच्छादि १४				
४	बलाहा ,,	रांकावांकादि २६				
५	मोरख ,,	पोकराणादि १७				
६	कुलहट ,,	सुखादि १८				
७	विरहट ,,	भुरंटादि १७				
८	श्रीश्रीमाल ,,	नीलडियादि २२				
९	श्रेष्टि ,,	वैदमुत्तादि ३०				
१०	संचेति ,,	ढेलडियादि ४४				
११	आदित्यनाग,,	चोरडियादि ८५				
१२	भूरि ,,	भटेवरादि २०				
१३	भद्र ,,	समदडियादि २९				
१४	चिंचट ,,	देसरडादि १९				
१५	कुंमट ,,	काजलीयादि १९				
१६	डिडू ,,	कोचरादि २१				
१७	कन्नोजिया ,,	वटवटादि १९				
१८	लघुश्रेष्टि ,,	वर्धमानादि १६				
१	चरड गौत्र.	कांकरीयादि	,,	,,	,,	,,
२	सुघड ,,	संडासियादि	,,	,,	,,	,,
३	लुंग ,,	चेडालियादि	,,	,,	,,	,,
४	गाडिया ,,	टीबांणीयादि	,,	,,	,,	,,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संख्या.	मूलगौत्र.	साखाओ.	आदिपुरुष.	पूर्वजाति.	प्र० ग्राम.	प्रतिबोधित आचार्य.	विक्रम संवत्
१	आर्य गौत्र	लुणावतादि	राव गौसल	भाटी	अटवड०	देवगुप्तसूरि	६८४
२	छाजेड ,,	सुरावतादि	राव काजल	राठोड	शिवगढ	सिद्धसूरि	९४२
३	राखेचा ,,	पुंगलियादि	राव राखेचा	भाटी	कालेर	देवगुप्तसूरि	८७८
४	काग ,,	.....	पृथ्वीधर	चौहान	धामाग्रामें	ककसूरि	१०११
५	गरुड ,,	धाडावतादि	महाराय	,,	सत्यपुर	सिद्धसूरि	१०४३
६	सालेचा ,,	बोहरादि	सालमसिंह	सोलंकी	पाटण	,, ,,	९१२
७	वागरेचा ,,	सोन्यादि	गजसिंह	चौहान	वागरा	ककसूरि	१००९
८	कुंकुंम ,,	घूपीयादि	अडकमल	राठोड	कन्नोज	देवगुप्तसूरि	८८५
९	सफला ,,	बोहरादि	लाखणसि	चौहान	जालोर	सिद्धसूरि	१२२४
१०	नक्षत्र ,,	घीयादि	मदनपाळ	राठोड	वटवाडाग्रामे	ककसूरि	९९४

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat
www.umaragyanbhandar.com

११	आभड़ ,,	कांकरेचादि	रावआभड	चौहान	सांभर	ककसूरि	१०७६
१२	छाजत ,,	कोणेजादि	रावछाहड	पँवार	धारानगरी	सिद्धसूरि	१०७३
१३	तुंड ,,	वागमारादि	सूर्यमल	चौहान	तुंडग्रामे	,, ,,	६३३
१४	पीच्छोलिया	पीपलादि	वासुदेव	गौड ब्राह्मण	पाल्हणपुर	देवगुप्तसूरि	१२०४
१५	हथुडिया ,,	छपनयादि	राउ अभय०	राठोड	हथुडि	,, ,,	११६१
१६	भंडोवरा ,,	रत्नपुरादि	देवराज	पडिहार	भंडोर	सिद्धसूरि	९३५
१७	मल ,,	वीतरागादि	मलवराव	राठोड	खेडग्रामें	,, ,,	९४९
१८	मुंदेचा ,,	गोगलीयादि	राव लाधो	पडिहार	पावागढ	देवसूरि	१०२६

× उपकेश गच्छाचार्योंमें पहला पाचवे पाट बाद तीसरे पाट वहका वह नाम आया करते है जैसे देवगुप्तसूरि सिद्धसूरि ककसूरि. उपकेशगच्छ द्विवन्दनिकगच्छ और खजवाणा कि साखा एवं तीनों पटावालियोंमें ककसूरि, देवगुप्त-सूरि, सिद्धसूरि नाम वारवार आया करते हैं वास्ते कीतने ही स्थान पर समय निर्णय करनेमें लोक चक्रमें पड जाते हैं और भाटों कि वंसावलियोंमें तों संवत् सालमें इतनी गडबड है कि वह सत्यसे सेकडों हाथ दूर रहेती है विशेष खुलासाके लिये लेखकसे दरियाफत करो या " जैन जाति महोदय " कीताब देखो ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat
www.umaragyanbhandar.com

उपर लिखे हुवे ४० मूलगौत्र की साखा प्रतिसाखारुप जातियों हुई है इन सब जातियोंकों प्रतिबोध देनेवाले आचार्य उपकेश गच्छ यानि कमलागच्छके थे वास्ते इन जातियोंका मूल गच्छ उपकेश (कमलागच्छ) है प्रायः इन सब जातियोंकी वंसावलियां भी उपकेशकमलागच्छ की पोशालोंवाले महात्मा लिखते हैं। कीतनेक ग्रामोंमे महात्माओंका आना जाना न होनेसे भाट लोक भी ओसवालोंकी वंसावलियों लिखनी सरू करदी है पर भाटोंके पास पुरांणी वंसावलियो नहीं है.

कमलागच्छीय महात्माओंकी पोसालो-बीकानेर, नागोर, खजवाणा, खीवसर, संखवाय, मेडता, जोधपुर, पाली, बुंदी, नरवर, आनंदपुर (कालु) जसनगर (केकीन्द) बैड, लाबीयों जैतारण, रास, आमेट, केलवे, पादडी, पीपलोद, लाहवे, सोजत, राजनगर, पीपलाज, हुरडे, सादडी, चोकडी, पालासणी, कोटा, माधुपुर, ईडवे, सेथाणे, जैपुर, सागानेर, छीपीये, रामपुर, चौणंद, भणाय, कणेडे, इन के सिवाय भी कमलागच्छ की पोसालों होगा इन पोसालोंवाले महात्मा उपर लिखे ४० मूलगोत्र और साखाओं अर्थात् इतनी जातियोंवाले की वंसावलि लिखते है अगर इन जातियोंसे कीसको अपना सरुसे खुर्शी नाम उतारना होतो पत्ता मील सक्ता है.

उपर लिखी जातियोंका मुद्दासर खुलासा साल संवत् आदि पुरुष तथा सुकृत कार्य कीया हुवोंका वर्णन " जैन जाति महोदय " नाम की कीताबमें दीया गया है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(२) कोरंट गच्छोपासक ओसवालोंके गौत्र—माडोत सुंघेचा, धूवगोता, रातडिया, बोत्थरा (वच्छावत मुकीम फोफलीया) कोटारी, कोटडिया, धाडिवाल, धाकड़, नागगोत्ता, नागसेठिया, धरकट, खीवसरा, मथुरा, सोनेचा, मकवाणा फीतुरीया, खाबीयाँ, सुखीया, संकलेचा, डागलिया, पांडुगोता, पोसालेचा, सहाचेती, नागणा, खीमाणदीया, वड़ेरा, जोगणेचा, सोनाणा, जाडेचा, चिचडा, कपुरिया, निंबाडा, बाकुलिया. एवं ३४ गौत्र. इन गौत्रोंसे साखाओं कीतनी निकली वह फिर प्रकाशित की जावेगा कोरंटगच्छ पोसालोवाला इन जातियों कि वंसावलि लिखते है ।

(३) वृहत्तपागच्छ या नागपुरिया तपागच्छोपासक ओसवालों की जातियों—(१) मोहलोणि, नौलखा, भुतेडीया, (२) पीपाडा, हीरण, गोगड़, शिशोदीया, (३) रूणिवाल, बेगाणी, (४) हिंगड, लिंगा, (५) रायसोनी, (६) झामड, झाबक, (७) छलाणी, छजलाणी, गोडावत, (८) हीराउ, केलाणि, (९) गोखरू, चोधरी, (१०) राजबोहरा, (११) छोरीया, सामडा, (१२) श्रीश्रीमाल, (१३) दूगड, (१४) लोढा, (१५) मुरिया—मठा (१६) जोगड, नक्षत्र, (१७) नाहार, (१८) जडिया. इन अठारा मूलगौत्र तथा इन की

---

१ खाबीया ललवाणि कलबाणि मोलाणि. कंदरसगच्छका भी कहते है स्यात् इन जातिकी वीरता मुखाला विगेरहमे दे दी हो.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

साखाओं की वंसावलि खराडी, बलुंदो, पांडु, नागोर के तपागच्छीय महात्मा लिखते है.*

वरडिया, वरदिया, वरहुडिया, बांठीया, चामड़, कवाड, शाहा, हरखावत, लालाणि, गांधी, राजगांधी, वेदगान्धी, सराफ, लुंकड, बुरड़, सांधि, मुनौत, गोलीया, आस्तेवाल, कछोला, मरडेचा, सीलरेचा, मादरेचा, लोलेचा, भाला, विनायकीया, कोटारी, मीन्नी, खटोल, चोधरी, सोलंखी, आंचलीया, गोठी, छत्रीया, डफरिया, गुजराणी, शेषअज्ञात इत्यादि इन सब जातियोंका तपागच्छ है।

(४) **आंचलगच्छोपासक ओसवाल जातियों**—गाल्हा आथागोत, बुहड, कटारीया, रत्नपुरा, कोटेचा, सुभादा, बोहरा, नागड, मीठडीया, वडोरा, गन्धी, देवानंदा, गोतमगोत्ता, दोसी, (डोसी) सोनीगरा, कांटीया, हरीया, देडिया, बोरेचा स्याला घरबेला इन मूलगोत्रोसे केई साखाओं भी नीकली है इन सब जातियोंका गच्छ आंचलगच्छ है।

(४) **मलधारगच्छोपासक**—पगारीया, कोटारी, बंबगंग, गीरीया, गेहलडा, चंडालिया, खीवसरा, शेष अज्ञात।

(५) **पुनमियागच्छोपासक**—सांढ, सीयाल, सालेचा, पुनमिया, शेष, अज्ञात।

(६) **नाणावालगच्छ**—रणधीरा, काटारी, ढड्ढा, श्रीपति, तिलेरा, कावडिया शेष अज्ञात।

* महात्मा जसराजजी नागोरवालोंकी वंसावलियोंसे उतारो कीनो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(७) **सुराणागच्छोपासक**—सुराणा संखला, वणवट, मिटडियासोनी, उस्तवाल, खटोड, नाहार, शेष अज्ञात ।

(८) **पल्लिवालगच्छोपासक**—धोखा, बोहरा, डुंगरवाल, शेष अज्ञात ।

(९) **कंदरसागच्छोपासक**—खाबिया, गंग, बंब, दुधेडिया, कटोतीया शेष अज्ञात ।

(१०) **सांडेरागच्छोपासक**—गुगलिया, भण्डारी, चुतर, धारोला, कांकरेचा, बोहरा, दुधेडिया, शिशोदीया, शेष, अज्ञात एवं १२ गोत्र सांडेरा गच्छवालोंको के थे वह आसोपवाले खरतरगच्छीय महात्माओं कों मुशाला में देदीये थे जबसे उक्त १२ गोत्रोंकी वंसावलि आसोप पोसालके महात्मा लिखते है ।

इनके सिवाय मंडावरागच्छ आगमियागच्छ छापरियागच्छ वडगच्छ चित्रवालगच्छ जीरावलागच्छ द्विवन्दनिकगच्छादिके महात्मा भी ओसवालोंकि वंसावलियों लिखा करते है पर वह कीतने गौत्र और कोन कोनसे गोत्र लिखते है वह ज्ञात होनेपर आगेके अंकोंमे प्रकाशित कीया जावेगा ।

उपर लिखी जातियों में संघि चोधरी बोहरा. खजांनची. कोठारी आदि के नाम बहुत से गोत्रोंमें आते है वह संघ निकालनेसे चोधर या कोठारका काम करनेसे हुवा है और कितनिक जातियोंका एक गच्छमें नाम है वह ही नाम दूसरा गच्छमें आता है इसका कारण यातो एक गच्छवाला दूसरा गच्छवालोंको दे दीया हो जैसे सांढेरा गच्छवाले १२ गोत्र खरतरगच्छवालोंको दे दीया

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

था. या कोइ अन्य कारण होगा। अगर सब गच्छोंके महात्मा अपने अपने गोत्रोंको छपाके प्रगट करे तो इसका निर्णय ठीक तौरपर हो सक्ता है।

जैसे अन्य गच्छों की पोसालें है वैसे खरतरगच्छकी भी बहुत पोसालें है पर वह एकाद पोसाल के सिवाय ओसवालों कि वंसावलियो नहीं लिखते है उनका कहना है कि बीकानेरमे कर्मचंद वछावतने हमारी वंसावलियां कुँवामे डाल दी थी वहांपर हमारे पूर्वजोंने आत्म-घात करी और कर्मचंद वच्छावत तथा वछावतोंके कुल परिवार को बीकानेर राजाने मारडाला था मात्र एक वच्छावत कि सगर्भा ओरत ढाढी के घरमें छीपके अपना प्राण वचाया था उसकी ओलाद के वछावत हाल है उनका नाम ढाढी लिखा करते है।

परं बीकानेर का इतिहाससें यह वात कल्पित पाइ जाती है बीकानेर इतिहास कहता है कि कर्मचंद वछावत बीकानेर का राजा रायसिंहजी का मंत्री था और बादशाह अकबर का कृपा-पात्र भी था. वि. स. १६५२ में कर्मचंदादि केइ लोगोने राजा रायसिंह के विरुद्ध में षट् यंत्र रच राजगादी राजकुमार दलपसिंह को देने की खटपट कर रहे थे वह खबर राजा रायसिंहको पडी. तब कर्मचंद बीकानेरसे भाग दिल्लि बादशाह अकबरके सरणमें चला गया. बाद वि. सं. १६६४ मे राजा रायसिंहजी दिल्लि गया उस समय कर्मचंद मृत्युकी शय्या पर सुता हुवा था अर्थात् सख्त बीमार था राजा रायसिंह कर्मचंदके पास गया सुखसाता पुच्छ शोक प्रगट

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कीया उसका मतलब यह था कि कर्मचंद मरणेकी तय्यारीमें है में मेरा बदला ले नहीं सका। कर्मचंद मरते समय अपने पुत्रों को यह शिक्षादी की बीकानेर राजा तुमको कीतनाही लालचा देवे तो भी तुम बीकानेर नहीं जाना. कर्मचंद दिल्लिमें काल कर गया. राजा रायसिंहजीभी वि. सं. १६६८ मे काल करते समय अपने छोटा पुत्र शूरसिंहसे कहा कि कर्मचंदका बदला मेरा हृदयमें खटक रहा है वास्ते उनके पुत्रोंसे तुम बलला जरुर लेना इत्यादि. अगर यह इतिहास सत्य है तो महात्मा या यतियों का लिखना है कि कर्मचंद बछावतने वंसावलियें कुवामें डाल दी और बीकानेर राजाने कर्मचंदको इस अत्याचार के बदलेमें मारा और बछावतोंका सर्व नाश कीया यह बिलकुल मिथ्या है। कारण कर्मचंदका मृत्यु हुवा दिल्लिमें और राजा रायसिंहका मृत्यु हुवा बुरानपुरमें।

कीतनेक श्रीपूज्योंने अन्यगच्छीय श्रावकों पर अपनी छापमार अपने दफतरोंमें उनको अपने गच्छके लिखनेकीभी साबुती मिलती है जिसका कारण.

(१) जिस देश जिस प्रान्त में जीस आचार्योंका विहार हुवा वहांके अन्यगच्छीय श्रावकों को अपनी क्रिया करवाके अपने दफतरोमे उनका नाम लिख अपने गच्छकी छाप ठोकदी.

(२) अन्य गच्छीय श्रावके को माला मंत्र यंत्र बतलाके अपनि छाप मार दी कि यह श्रावक हमारे गच्छ के है।

(३) अन्य गच्छीय श्रावक कीसी श्रीपूज्योंसे प्रतिष्टा कर-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वाई हो तो श्रीपूज उन श्रावकका नाम अपने दफतरमे अपने गच्छके श्रावक तरीके लिख दीया.

(४) अन्य गच्छीय श्रावकके निकाला हुवा संघमें कीसी श्रीपूजकों साथ ले गये तो उस परभी अपने गच्छके श्रावकोंकी छाप ठोक दी.

(५) अन्य गच्छीय श्रावक कीसी श्री पूज्योंसे भगवत्यादि प्रभाविक सूत्रका महोत्सव कर सुना हो उसे भी अपना श्रावक होना मान लीया.

(६) अन्य गच्छीय श्रावक कीसी श्री पूजको खमासमण दीया हो वा नगर प्रवेशका महोत्सव कीया हो उसेभी स्वगच्छकी श्रेणिमें मान लीया.

(७) अन्य गच्छीय श्रावक कीसी दूसरा गच्छके आचार्योंका पद महोत्सव कीया हो तो दफतरोंमे दाखल कर लेते है की यह श्रावक हमारे गच्छका है इत्यादि एसी बहुतसी घटनाएं हुइ है जिसका खुलासा जैन जाति महोदय नामकी कीताबमें विवर्णके साथ लिखा गया है।

पाठक वर्ग यह नहीं समजे की लेखकके हृदयमें गच्छकदाग्रह है मेरा खास हेतु यह है कि जो असलि वस्तु इतिहासके रुपमेंथी ऊसे बदलाके एक कपोल कल्पीत गप्पोंकि श्रेणिमें लेजाना इससे इतिहासकों कितनि हानि पहुंचती है उसे रोकना. दूसरा जिन महात्माओंने अपनी आत्मशक्ति व उपदेश द्वारा जिन भव्यात्माओं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को दुर्गतिका रस्ता छोडा के सुगतिकि सडकपर लगाया था उन पूज्यवरोंका नाम तकको भुला देना क्या यह सरासर अन्याय नहीं है ? अगर अन्याय है तो उसे न्याय देना मनुष्यमात्रका कर्त्तव्य है ।

अब हम हमारे पाठकों को यह कहना चाहते है कि कोइ भी श्रावक यथारूची कीसी भी गच्छकी क्रिया करता हो उससे हमारा किंचत् भी विरोध नहीं है हमारा विरोध तो खास उससे है कि इतिहासके खिलाप लेख लिख कर जैन लेखकोंकि हांसी कराता है इस वास्ते ही जनताको यथार्थ सरूप बतलानेको यह मेरा प्रयत्न है. इसको पढके हमारे ओसवाल सज्जन अपनी अपनी जातिका निर्णय कर अपना वंशवृक्ष--खुर्शी नाम शीघ्रतासे तय्यार करेंगें।

अन्तमें यह निवेदन है कि इस दोनों अंक लिखनेमें मेने बहुत छानबीन करी है तथापि मेरे जैसे अल्पज्ञ से त्रुटियों रहना स्वाभाविक वात है इस नियमानुसार अगर मेरे लिखने में कोई त्रुटियों हो उसे सुधारके पढे ओर मुझे सूचना देनेकी कृपा करे तांके द्वितीयावृत्तिमे सुधारादी जावे शम्

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

समाप्तम्

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

'जैन जाति महोदय' नामकी किताब तय्यार हो रही है जिसकी विषय सूची.

(१) जैन धर्म अनादि कालसे प्रचलीत है जीसमें वर्तमान चौवीस तीर्थंकरो का वर्णन।

(२) भगवान् पार्श्वनाथ प्रभुकी परम्परा से आज तक आचार्योंकी बृहत्पट्टावलि और जैन जाति बन्धारण की शरुआत।

(३) जैन जातियों द्वारा देशसेवा, राजसेवा, समाजसेवा, धर्मसेवा और उनके प्राचीन वंशावलियों, मूल गौत्र, शाखा--प्रतिशाखाओंका वर्णन।

(४) जैनधर्मोपासक राजा--महाराजाओं द्वारा देशोन्नति और शान्ति का साम्राज्य।

(५) जैनधर्मोपासक मंत्री, महामंत्री, दीवान, प्रधानादि पदाधिकारियों से देशोन्नति।

(६) जैनधर्मोपासक रणकुशल, संधिकुशल वीर योद्धाओं की विजयपताका और वीर योद्धाओं के पीछे वीराङ्गनाओं की सती होने की लोकप्रथा।

(७) जैनधर्मोपासक व्यापारीयों के जरिये देश--विदेश में व्यापारोन्नति।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(८) जैनधर्मोपासक दानवीरों की तरफ से अनेक भयंकर दुष्कालों में उदारतापूर्वक खोली हुइ दानशालाओं, पशुपालन, गौ-रक्षक संस्थाओं का वर्णन।

(९) जैनधर्मोपासकोंको राजा-महाराजा, बादशाहों की तरफ स मीला हुआ पदाधिकार- जगतशेठ, नगरशेठ, कमलापति, शाहादि शेठजी बोहराजी आदि का वर्णन।

(१०) जैनधर्मोपासकोंके राजा-महाराजा, जागीरदार और कीसान लोग जिन के करजदार रहते है उन्हों को "बोहरों" की पद्वि मीली थी।

(११) जैनाचार्योंने अपना मंत्रबल, विद्याबल, ज्ञानबल द्वारा जनता का कीया हुवा कल्याण का वर्णन।

(१३) जैनधर्मोपासकोंने-जनता का कल्याण के लिये क्रोडों द्रव्य खरच कर बडे बडे तीर्थों पर ग्राम-नागरादिक में बन्धाये हुवे भव्य जिनालयों का वर्णन।

(१४) जैनधर्मोपासकोंने--क्रोडों रुपैये खरच कर अनेकवार तीर्थयात्रा निमित्त निकाले हुवे संघ जिस में अन्यधर्मीयों की सहा-नुभूति का वर्णन।

(१५) जैनधर्मोपासकोने जनता के आरामी के लिये क्रोडो द्रव्य खरच कर बनाये हुवे तलाव, कूआ, वावडीयां, मठ, धर्म-शालाओ आदि का वर्णन।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(१६) जैनधर्मोपासकोंने आर्य कला–कौशल्य कों दीया हुवा उत्तेजन का वर्णन ।

(१७) जैनाचार्यो का देशाटन से पशुहिंसा बन्ध और 'आहिंसा परमोधर्म' का प्रचार से देश की उन्नति और पशुधन पालन से देश को अनेक फायदा ।

(१८) जैनाचार्योंने अनेक विषयों पर अनेक ग्रन्थ लिखके करी हुइ साहित्य की उच्च कोटी की सेवा का वर्णन ।

(१९) जैनाचार्योंने अनेक राजा–महाराजाओं की सभाओं में शास्त्रार्थ कर सत्य धर्मका प्रचार और विजयपताका का वर्णन ।

(२०) जैनधर्मोपासकोंने अनेक उपद्रवो में क्रोडो रुपैये खरच के जनता के हित के लिये कराइ हुइ शान्ति का वर्णन ।

(२१) जैन धर्म पर वर्तमान कीतनेक अज्ञ लोग व्यर्थ आक्षेप करते है. जैसे–जैन निर्बल है, जैन कायर है, जैन शाक-भाजी के खानेवाले है, जैन गंधी हुइ गटर है, जैन काला नाग है, हिन्दुस्तान की गीरती दशा का कारण जैन ही है इत्यादि. इन सब आक्षेपों का सप्रमाण सभ्यतासे दिया हुवा उत्तर का वर्णन ।

उपरोक्त २१ विभाग में यह "जैन जाति महोदय" नामक कीताब समाप्त की जायगी. जैनों के सिवाय अन्य जातियों का गौरव जो हमे मीला है या मीलेगा वह भी निष्पक्षदृष्टिसे इस किताब में दर्ज कर दीया जायगा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस किताब के पढने से आप को यह रोशन हो जायगा कि पूर्व जमाना में जैन जाति का कितना गौरव और कितनी विशाल संख्या थी. वह कीस कीस कारणोंसे आज गीरी दशा कों भोग रही है और अब कीन कीन उपायों से पुनः गया गौरवको प्राप्त कर सके. वह उपाय साध्य है या असाध्य ? अगर साध्य है तो जैनकोम आंखो मिंच क्यों अंधारा कर बेठी है वह सब स्पष्टता से बतलाये गये हे और भी कोइ उपयोगी विषय इस किताब में लिखा जावेगा.

ओसवालो जागो ! और आपका सच्चा इतिहास जनताके सामने रखो !

इस किताब कि समाप्ति के समय मुझे एक " जाति अन्वेषण प्रथम भाग " नाम कि किताब मीली जिस्का लेखक फूलेरा निवासी. पं. छोटालाल शर्म्मा है इस्वीसन् १९१४ में छपी है उस किताब के पृष्ट १३२ से १३६ तक ओसवालों के बारामे उल्लेख करता हुवा लेखकने लिखा है कि—

ओसवाल, डोसी—शूद्रपापीष्टकुकर्मिजातियोसे बने हैं।
,, छाजेड—छाज वेचनेवालि जातियोंसे बने है
,, संघी—सींग वचनेवालि जातियोंसे बने है
,, चंडालिया—भंगीयों--चंडालोसे बने है
,, बलाई—बांभीयोसे बने है
,, तेलीया—तेलीयोंसे बने है

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इत्यादि ३१ जातियो के नाम लिख लेखकने शंका करी है कि ओसवालों को कोनसा वर्ण में लिखा जावे ? उक्त कीताबको पढतेही पीपाड के ओसवालों ने एक नोटिस उक्त लेखकको दीया हे कि पवित्र क्षत्रीवर्ण से बनीहुई ओसवाल जातिपर आपने मिथ्या आक्षेप कीया है इसे आप शीघ्रतासे वापीस खींचलो नहीं तो ओसवालजाति इस मिथ्या आक्षेपको कभी सहन नहीं करेगी इत्यादि । आशा है कि शर्म्माजी अपना--मिथ्या आक्षेपको पीच्छा हटा लेगा नहीं तो हमे आगे वढना होगा ।

ओसवालो ? आपने देखा होगा, पढा होगा, सुना होगा, की जाट क्षत्रीमहासभा " मालिक्षत्रीसभा " मेण(सुनार)क्षत्रीसभा सुतार विश्वाकर्माकी संतान है कुंभारराजा प्रजापतिका संतान है ढेढ खास परमेश्वरके अंगसे पैदा हुवे. नाई इश्वरकी संतान है. मेणा भीलभी राजपुत्त बनने को तैय्यार है तब आप खास क्षत्रीयोसे ओसवाल बने हो जिसाकि साबुति इतिहास दे रही है इतने परभी अज्ञलोक आपको शूद्रादि हलकी जातियोंसे ओसवाल बने हुवे लिखने को तय्यार होगये है । क्या आपमें जाति गौरव है ? क्या आपमें कुच्छ जीवन रहा है ? अगर रहा है तो अपनि पवित्र जातिका सत्य इतिहास लिख जनताके सन्मुख रखो कि मिथ्या लेख लिखनेवालेका मुंह खटा होजाय आगे स्थान अभाव ।

समाप्त.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com